हिंज़े वनवुन



संकलनकर्ता :
लक्ष्मीश्ररी कान्डू

हिंज़े वनवुन

ॐ

संकलनकर्ता :
लक्ष्मीश्वरी कान्दरू

प्रकाशन कार्य :
बदरी नाथ कान्दरू
कुटीर निवासी, लेन नं० 4
ईश्वर नगर, उदयवाला
बोड़ी, जम्मू
दूरभाष : 2552695

मिलने का पता :-

मैसर्ज़ दुर्गा ट्रेडर्ज़ आनन्द नगर बोड़ी, (समीप शास्त्री मैमोरियल बी०एड कॉलेज)
विजयेश्वर पंचाँग कार्यालय अजीत कॉलोनी, गोल गुजराल कैम्प, जम्मू।
दुर्गा प्रिंटिंग प्रैस ओल्ड जानीपुर जम्मू। दूरभाष : 2539863, 2533456

प्रथम संस्करण :	1000 प्रतियाँ	जनवरी 1999
दूसरा संस्करण :	1000 प्रतियाँ	सितम्बर 2001
तीसरा संस्करण :	500 प्रतियाँ	जुलाई 2005

मूल्य : 35 रु०

दो शब्द

नमस्कार !

काश्मीरी भाषा की जो काव्य पंक्तियाँ मैं आप के समक्ष रखने जा रही हूँ, वे *"वनवन–हुरि"* के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह शास्त्रीय संगीत पर आधारित वह लोक गीत है जिसका प्रयोग काश्मीरी हिन्दू जाति शादी–ब्याह, यज्ञोपवीत आदि विशेष पर्वों पर बड़ी श्रद्धा से करते हैं।

"वनवन–हुरि" मूलतः संस्कृत भाषा के श्लोक हैं जिन्होंने हिन्दी तथा काश्मीरी भाषाओं के शब्दों को अपने में समा कर, एक विकसित रुप में जन–साधारण के शुभ पर्वों में अपना एक विशिष्ठ स्थान बनाया है। आधुनिकीकरण के नाम पर हमारा समाज जिस पश्चिमीकरण की ओर अग्रसर है, उसकी झलक जीवन के हर क्षेत्र में स्पष्ट दिखाई देती है। संगीत इस से अछूता नहीं रहा है। पाश्चात्य संगीत के बढ़ते प्रभाव के बावजूद *"वनवुन"* की अनिवार्यता आज भी उतनी ही तीव्र एवं अटल है जितनी कई दशक पूर्व थी। परन्तु *"वनवुन"* कहने वाली दक्ष महिलाओं में कमी आने के कारण इस से

सम्बंधित विषमताएं बढ़ गई हैं। यही कारण है कि पूवर्जों की इस धरोहर को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ा।

मैं कोई लेखिका नहीं हूँ और न ही *"वनवुन"* को एक पुस्तिका के रुप में प्रस्तुत करके मैं ऐसा कोई दावा करती हूँ। रुचि के कारण, इन श्लोकों को समय–समय पर माताओं, बहिनों से सुनकर मैं नोट करती गई। शनैः–शनैः इन की संख्या शतकों में आ गई। मुझे विचार आया कि क्यों न इन्हें एक पुस्तिका का रुप देकर जन–साधारण तक पहुँचाया जाये।

इस सम्बन्ध में पहले ही कुछ प्रकाशन देखने को मिला है परन्तु मेरा प्रयास है कि व्याकरण तथा अन्य बिन्धुओं पर अधिक ज़ोर ड़ाले बिना ही इसको सरल एवं सटीक ढ़ंग से प्रस्तुत करुँ। मेरा प्रयास कहाँ तक सफल रहा है, यह मैं आप पर छोड़ देती हूँ।

इस पुस्तिका को आरम्भ से लेकर अन्तिम रुप देने तक के लिये प्रेरित करने का श्रेय मास्टर पुष्कर नाथ जी तथा मेरे परिवार सदस्यों को जाता है। उनके अमूल्य प्रोत्साहन एवं सहयोग के बिना यह कार्य असम्भव था। इस मार्गदर्शन और सहयोग के लिये मैं उनको हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। और आशा करती हूँ कि आप मेरे इस प्रयास को पसन्द करेंगे।

धन्यवाद

लक्ष्मीश्ररी (कान्दरू)

प्राचीनकाल से परम्परागत बहती आरही काव्य धारा जिस का उपयोग षोडश संस्कारों में सर्वोत्म तथा सर्वमान्य यज्ञनोपवीत तथा विवाह संस्कारों में होता आ रहा है – को भविष्य में भी अपनी मधुर गरिमा से प्रवाहित रहने के लिए इस को अनुप्राणित करने का अपनी तरह का एक सफल तथा अनुपम प्रयास श्रीमती लक्ष्मीश्ररी (कान्दरू) की इस लघुकाव्य पुस्तिका में देखने को मिलता है । इन्होंने शोत्रसाधन का प्रयोग करके इन श्लोकों को कण्ठस्त कर पुस्तिका का रूप देकर एक उतम कार्य किया है जिस के लिए कश्मीरी हिन्दु समाज इनका ऋणी रहेगा ।

मेरी हार्दिक कामना हे कि भगवान इनको इस सामाजिक सत्कर्म के लिए शुभ फल प्रदान करे ।

शत आशीष के साथ

'पुष्करनाथ'
आचार्य पारिजात
अध्ययन केन्द्र
आनन्द नगर, बोडी

अनुक्रमणिका

भाग - १ कोरि खान्दर वनवुन



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

भाग - १

कोरि खान्दर वनवुन

(लिवुन)

001 शेकलम करिथ हेमव वनवोनुय ।
ॡति फल दिती माजि भवानी ।।

002 प्रज़ि पेठ अनितोन ब्रह्मण छ़अरिथ ।
लिवनस क्युत दियि सात च़अरिथ ।।

003 नवि नेशपतरे रुत द्राव साथा ।
जंगि हुन्द दाता श्री भगवान ।।

004 सोन सन्दि टोन्गरे रोप सन्दि बेलो ।
बालय वालुस शेलय म्येच़ ।।

005 थोद तुल लछ़जी हाय वाल रवकन ।
मुरि दार च़द्रंय तारकन ।।

006 म्येचि तय पअनिस खवअच खम्बीरो ।
गम्भीर असि कअर गरनावय ।।

007 असि कअर म्योचि कअम रचि बोधवारे ।
कमि हारि कअरनय गरनावय ।।

008 असि कअर म्येचि कअम प्रिछिय गोरस ।
ती आव परमीश्वरस खोश ।।

009 गरनोवथय गरुडस खसिथ ।
बौविनय लक्ष्मी स्वस्ती आय ।।

010 गरनावनस नछतर सोवुयि ।
भवअनि आय पोश लोवुयि ह्योथ ।।

011 गरनावनस जन्गि कुसुयि ओयिय ।
मंगला दीवी त नन्दकीश्वर ।।

012 रव लोग भवनस थव आव कोन्गस ।
सन्ज़ ह्योत खान्दर करनस ।।

013 सन्ज़ ह्योत खान्दरस कुलि-कअटि सग्वय ।
कन्ज़ दियुत वुलगे त खवअर हतस ।।

014 दपने नेरनस जन्गि कुस ओयिय ।
मंगला दीवी त नन्दकिश्वर ।।



मस मुचरावनस वनवुन

015 ओं सेदि दाता वेग्न हरतारो ।
गणपत यारय मस मुचरय ।।

016 शोकलम करिथ मस मुचरअयेय ।
शोभ फल दितीय माजि भवअनी ।।

017 मस मुचरनस जन्गि कुस ओयय ।
मगँला दीवी त नन्दकिश्वर ।।

018 कूरैय मसतस गन्ड़ मुचरोयय ।
दुकि-दुकि खन्ड़ हन आपरोयय ।।

019 मस मुचरायेय खेशे-खेशे ।
विश्वामित्रनि कूरियेय ।।

020 मस मुचरोयय बालय-वालय ।
बालय चन्द्रनि कूरियेंय ।।

021 मस मुचरोयय रूमय-रूमय ।
भुमय सीननि कूरियेय ।।

022 मस मुचरोयय दावय-दावय ।
भावयि कोरयय माजि भवानी ।।

023 मस मुच़रोयय दअछिने दारे ।
हारे ब्रारे सेदा स्योद ।।



दपुन

024 दपनुक सामान मोल प्योय जअरी ।
कपटुय ड्येक सरदअरिये ।।

025 सीता मअली दपने द्रायिरवय ।
ज़नक राजुन घर चा़यरवय ।।

026 नून चो़चि अतगत ह्लोथ तोर द्रायिरवय ।
दशरथ राजुन घर चा़यरवय ।।

027 दपने द्रायिरवय रवासन रवासन ।
पासुक म्यूलुय सोन गुनसा ।।

028 दपने द्रायिरवय मालिनि परिवसय ।
नरिवसय अनिथय मोहरअ त लाल ।।

029 दपने द्रायिरवय अन्दिये-अन्दिये ।
दपवअनि गन्डथय सोन बन्दिये ।।

030 दपने द्रायिखय पननिस पूरिस ।
दपवअनि अनिथय टूरिस केथ ।।

031 दपने द्रायिखय दछि डूरि मन्जियये ।
अछदअरि यज़मन बाईये ।।



ज़्युन चट्टुन

032 सोन सन्ज़ि मकचे रोप सुन्द दन छुयि ।
वन खअति च़दुन च़टअने ।।

033 सोन सन्ज़ि मकचे दन दुब दार छुयि ।
बब सुबदार छुयि सन्ज़ करान ।।

034 ज्युन चोट कारन्दव बेयि तबरदारव ।
अज़्ज़ी खबर गयि बान्धवन ।।

035 वासदीव राज़नेन तबरदारन ।
कृष्ण जीनेन बान्धवन ।।



क्रूल खारून

036 दीवियव सग द्युत वस्तर वनस ।
दीवता वथ हावनस छिस ।।

037 अस्त-अस्त खअच़रवय डढंख वनस ।
दस्त-दस्त वअजिथंय जाय लछ़जि ।।

038 समिथ खसवय डंढख वनस ।
नेमिथ वालय जाय लछ़ाजे ।।

039 पोनि फिर टठजे लछ़िज डाल हंगस ।
यथ राज़ रंगस छु नमस्कार ।।

040 आरवलि लछ़जे मोत्त राज़ गन्ड़वय ।
दयस मंगबथ आधेकार ।।

041 रोप पल कांकन छुनिथय क्रूल थाजे ।
ऊों ब्रारि माजे छि मअंजे राथ ।।

042 आंगनस सअनिस बबरे रोभिये ।
धोबि आयि लर सानि नावने ।।

043 वोस्तकार बअई लदि सोठकव्य च़ीनी ।
मोत्तहार ब्येनि कोर मोनेन गछ़ ।।

044 पथ ही थरे ब्रोंठ रंग च़्रें ।
शाम सोन्दरि कोर मोनेन गछ ।।

045 क्रूलय थाजे जंग अनि माजे ।
क्रूलस मोहरा त्रावसे, हटिस हारा त्रावसे ।।

046 क्रूल खोरुथय नेंदरे हचे़ ।
सेन्दरे खोरुय बरिथय ।।

047 म्युल गोव मअंजे़ मरदे त क्रूलस ।
मूलस वाच़य मुच़यया ।।

048 च़न्दनवि राज़दानि धअतवि हंग छुयि ।
राज़व रंग छुयि शोल दीवान ।।

049 वरि करेयथय वरि सोन्दरिये ।
करि सोन्दरिये कोसमन क्राव ।।

050 वरि करयथ देगि तय पोन्सन्दिस दानस ।
सोन हयि लोव लाग बर हंगस ।।

051 वरि करेय थय अनक दानस ।
ज़नक त्र्टोष सोन वर्गस चा़व ।।

052 नवि लरि कन दरि हअरित चरे ।
असि कअरि वरे लरे पेठ ।।

053 बाट नचि बोट चोचि हंग वचि नावय ।
क्रूल चोचि हावय प्रअप्यूनुय ।।

054 ज़ोतवनि लाल छी मन्ज़ मारकन ।
कशीर हिन्देन तारकन ।।

055 असि कर मंअज़ि रात बान्दवन किच़ये ।
लक्ष्मी हेच़य नीरि नव ।।

056 शीरीनि फलेन कलाय कन्दन ।
दौलत मन्दन छे मन्जे़रात ।।



मअंज़ेरात

057 दक्षिन किस बालस मअंज़ि हुन्द तर द्राव ।
शर द्राव लालस छि मअंजेरात ।।

058 पादशाह बागस तुलमुलि नागस ।
त्रागस मन्ज़ फोल मंअजे पोश ।।

059 हीमाल पर्वतस फअलि मन्ज़ि टूरी ।
च़अटि-च़अटि वअलिमय यूरिये ।।

060 वोन्या आयोव अथि हेथ बही ।
वनु मालि मअंज़ि मोल कहि छुय ।।

061 वल मालि वान्यो बेह सानि पेन्जे ।
मअज़ि तोल पूरे डन्जे सान ।।

062 बेह मालि वासदीव राज़नि पेन्जे ।
अज़ि सानि लंजि ब्यूठ बुलबुल त काव ।।

063 कृष्ण महाराजो वअच़यो होन्जे ।
मअन्ज़ तोल पूरे डन्जे सान ।।

064 स्वर्ग खवअच़ मअज़ तय मअंज़ आयि पानी ।
मअन्ज़ि कअर मेहरबानिये ।।

065 दिलिल अनि मअंज़ तय वति गय डलिये ।
तति रअट साहेबज़ादन अफसरिये ।।

066 मअंज़ि कुल ख्वोरमय दोध सअति सगवान ।
तोहि दोन रछीनव श्री भगवान ।।

067 शहर खवअर मअंज़ तय वति लअजि ठठिये ।
असि अनि ड़खिये नावन केथ ।।

068 शहर खवअर मअंज़ तय दान-दान छानवय ।
खानमालेन करवय मअंज़ेरात ।।

069 मअंज़ येलि छअनि तय पत बअर पूरेन ।
येति छेमय शूरेन मअंज़ेरात ।।

070 शहर खवअर मअन्ज़ तय वति भरय काबन ।
येति छेमय सहाबन मअन्ज़ेरात ।।

071 दछ राठ खवअच़मय दारि तय हंगस ।
अअलि तय रोगस छि मअन्ज़ेरात ।।

072 दछि राठ खवअच़मय डबि दफतरसय ।
राज अफसरसअथि छि मअन्ज़ेरात ।।

073 मअन्ज़ि सअति सूरत ब्येय रेंट पावा ।
भावा कोरुय माजि भवानी ।।

074 लालव मअंजे मंग हो आई ।
ज़गं हो आई रअच़ये ।।

075 यथ लरि शूभहन सोनसन्दि ठठिये ।
यअहय लअर शालमहर बठिसअय पेठ ।।

076 क्रन्ड कड कण्ठमाल पोट करि दायेय ।
अज़ि गन्डि यज़मन बअयियेे ।।

077 सर मन्ज़ रत्ना ख्वोतमय पअनी ।
चअनि दोह यछिमय नारअणी ।

078 मन्ज़ि किति कन्डि अनि साहेबज़ादन सअनी ।
कथा रूज़यि त्रेन भवनन ।।

079 दोस दिच़ दसिलन लरि लज़ छअनी ।
चअति दोह यछिमय नारअणी ।।

080 मअंजे रअच़यि सोम्बरिन बअच़यि ।
वअच़यि गंग जमना त सरस्वती ।।

083 शहर रवअर मंअज तय असि वअच ड़अली ।
कमि रंग बअलि थव अअड़रअविथ ।।

084 असि कअर मअंज़िरात बान्दवन किच़ये ।
लक्षमी हेच़येये नीरीनव ।।

085 जूनि सअति ताररव ज़ ून ब्योठ सअतरस ।
असि राज़-पोतरस मंअज़ेरात ।।

086 वोज़ा आयोव रात लजिस बजुलि ।
तेलि आव येलि फज़ि यम्बरज़ोलि पोश ।।

087 सोन तोलअयोव रचे़-रचे़ ।
मअंज़ तोलअयोव तारचि़ सअति ।।

088 सोन लदय तारचि़ मोरवत खोत ड़जनय ।
चानि यकबाल फोलि लजनय पोश ।।

089 असि वअच़ मअंज़ तय खवअच़ तापदानन ।
शहि ज़ाफरानन छि मअंज़ेरात ।।

090 असि वअच़ मअंज़ तय खवअच़ दरपरदन ।
येति सरकरदन छि मअंज़ेरात ।।

091 सथ मन मर्अंजि़ हन्दि वथ आयि मडंनय ।
कस भगनानस छि मअंज़ेरात ।।

092 बुथि छक सब्ज़ तय रंग वोज़जी ।
कमि वान अनिमरव मोल्लजी ।।



महारेनि महाराज़स मअंज़ लागनि

093 दोहस फ्यूरहम यारय बलिये ।
शामन छलिये ख्वोर-फलिये ।।

094 महाराज़ लालो पादशाह पसन्दो ।
मर्अंजि़ मसनन्द हो प्रारान छुयि ।।

095 यज़मन बाई अनतय थालयि ।
ल़ाल हय ज़ोवुयि मअंज़ लागहोस ।।

096 यज़्मन बाई शमादान ज़ालतय ।
मअंजि़ कोण्ड़ वालतय देवान खान ।।

097 पार्वती आई रथस खसिथ ।
महाराज़स लागव अथस मअंज़ ।।

098 उमायि ज़ामय महा-गणेश आदन ।
महाराज़स लागव पादन मअंज़ ।।

099 दोहस ख्येथम दोध-भत मेड़िये ।
शामन लागय टेडिये मअंज़ ।।

100 आखो विलि तय ज़ाखो वखतय ।
मअंज़ लागय पादशाह तखतस पेठ ।।

101 मअंज़ लागनस ज़ंग अनितोहसे ।
मंग छेयि मअंजि़ तय पोफ बअगरान ।।

102 पोफव कअरहय मअंजि़ नकअशी ।
मांजव कअरहय जाल सअज़ी ।।

103 पोफ आसय मोछि मअंज़ लागान ।
मासय आसय कोछि ललवान ।।

104 माजव ह्योतखव खोनि ललवोनयि ।
मामव छकिहय दोछि़-दोछि़ ध्यार ।।

105 तेल फोल वोवथय चन्दन-कुल ज़ोये ।
बब त मोजि ओये दुरि-भत ह्योथ ।।

106 यिम कम दुरि-भत वाजेनि आये ।
हिन्दोस्तानचि हेन्द बाये ।।

107 यज़मन बाई वग त्राव ड़ेजिये ।
ब्रंग आव कोतर खेजिये ह्योथ ।।

108 वोलरचेन गाड़न सोनसन्दि कंडिये ।
बेनिये बोयि आव हंडिये ह्योथ ।।



दिवगोन

109 शोकलम करिथ वनवुन ह्योतुयि ।
शोभ फल दितीय माजि भवानी ।।

110 सोन सन्दि टोंगरे रोप सन्दि बेलो ।
बालय वालसि शैलय म्येच़ ।।

111 जमनायि ज़लय गगांय म्येचे़ ।
दिवगोनस क्युत लिवसे ।।

112 गंग बल तोरमय गंगवा नोटुयि ।
वोत्यम वोटुय लिवसे ।।

113 आकाशि वअछरवय अम्बरावतिये ।
श्री सरस्वतिये कानी लिव ।।

114 दोध के हर सअति कानी लिवसे ।
ओर यियि ब्रह्मुण खिर वथरोस ।।

115 वोशनारि थोवमय पोश बाग लिविथ ।
दशरथ राज़ खोत श्रान करिथ ।।

116 स्वर्ग खोत सालिग्राम अरननि वेरे ।
धर्मचि जाय लोग छ़ांडने़ ।।

117 स्वर्गस खोतमय च़न्दन टूपयि ।
रूपय नाराणजूवने ।।

118 दिवगोनस सन्ज़ ह्मोत धमयन्ती माजे ।
तेल डूनि तय ग्येव श्रीफल ।।

119 खारसि तेल मरदे त बादाम ।
आदन बोजीय लसिनय ।।

120 कलशस खारुस बादाम सासा ।
दासस रूमय ऋटेषुण आय ।।

121 यूरि कुन मरेद तय तूरि कुन बेछोरवो ।
तारख ज़ितिश वार ऱख लेछेथो ।।

122 अर्श वअथिमिति अर्जन दीवो ।
फर्शस पेठ छेयि कलशस जाय ।।

123 दिवगोनस ब्यूहम गोर ह्योथ पानय ।
सोनसन्दि बानय वाहरोसे ।।

124 कलशिचि विज़े रेथि वोथ नाराण ।
कलशुक मण्डुल वाहरान ओस ।।

125 कलशिचि विज़े दय टोठ्योयो ।
पूज़ि ब्यूठ्यो नारायण ।।

126 बड़ि आरव बोलत दय सन्दि लोलय ।
शोलय दिववुन ट्योकुय लाग ।।

127 दातो करयो ताबेदअरी ।
गोरन गोन्डयो नअरीवन ।।

128 मन्ज़ रोबरवानस वहामिय डूनी ।
सोन कोसम तय मादलि पोश ।।

129 सदाशेवस माँगस मन्गो ।
कन्यक ज़न्गो अनोसे ।।

130 कलशस पूज़ कर वोत्मय नरयो ।
हरी हरों हलदरो ।।

131 कलशिचि विज़ि वछ़ अन्तय दारय ।
कलशस पूज़ कर वारय पअठि ।।

132 कलशस पूज़ अर्ग त पोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

133 पूरे खोतखो सिरिया वेशो ।
दूरे कोरमय नमस्कार ।।

134 च़य छुख सारिनयि प्राणावेशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

135 फागनि फोलहम भेदमुशुक पोशो ।
गोशस रअटथम थरि पेठ जाय ।।

136 गोडनी सोन्तअ आहम खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

137 चि़त्री फोलहम विरिकुम पोशो ।
गोशस रअटथम जंगलय जाय ।।

138 नवरेह दोहो आहम खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

139 पेठय बान फोलहम च़ेरय पोशो ।
गोशस रउटथम कुलिस पेठ जाय ।।

140 म्येव चोन हुमन त यग्येन खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

141 आदन फोलहम बादाम पोशो ।
गोशस रउटथम परबत आय ।।

142 बर्ग चोन सबज़ तय म्येव चोन खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

143 वहकी फोलहम कोसम पोशो ।
गोशस रउटथम थरि प्येठ जाय ।।

144 च़अयि हो ठाकुर सअबस खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

145 ज़ीठी फोलहम गुलाब पोशो ।
गोशस रउटथम वारि मन्ज़ जाय ।।

146 बर्ग चोन वोजुल तय मुशुक चोन खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

147 हअरी फोलहम घअरी पोशो ।
गोशस रउटथम सरस मन्ज़ जाय ।।

148 दहमन त कअशन छहमो खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

149 श्रावनि फोलखो दत्तरी पोशो ।
गोशस रअटथम छ़ोटस पेठ जाय ।।

150 च़अयि छुख सदाशिवस खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

151 भअदरि फोलखो कपस पोशो ।
गोशस रअटथम ड़ारस मन्ज़ जाय ।।

152 यह लूक परि लूक परदय पोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

153 अअर्शाद फोलहम जाफरि पोशो ।
गोशस रअटथम वारि मन्ज़ जाय ।।

154 रअग्न्यायि भूतीश्वर आहम खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

155 कार्तिक फोलहम कोङ्ग़्य पोशो ।
गोशस रअटथम पोपर जाय ।।

156 च़अचि हो ब्रह्मण तीज़स खोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

157 सोपूरि वते लोगमुत रअशो ।
शारद बालस छि दिवना जान ।।

158 माजि शारदायि हुन्द दर्शुन ड़ेंशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

159 तुलमुलि वते लोग गलगोशो ।
गंगय बलस छि दिवना जान ।

160 बुथि शेरि वसवनि लअजिमो त्रेशो ।
सोरिव तप ऋटेषवं सदाशिव ।।

161 अनन्तनाग वते लोग गलगोशो ।
ड़ायि वहरि बटन आव मटन मलमास ।।

162 चाकबल पेतरन मोकल्येय त्रेशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

163 पहलगाम वते लोग गलगोशो ।
अमरनाथ दिवना जान ।।

164 सदाशिव सुन्द दर्शुन ड़ेंशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

165 शुपयन वते लोग गलगोशो ।
दिगामि नागस छि दिवया जान ।।

166 कन्यकन बालकन मोकल्येय त्रेशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

167 यज़मनयि धर्म पोरोशो ।
जायि-जायि बनाविथ देवान-रवान ।।

168 सोठक्रूवि चीनि तय मोक्तवि पोशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

169 कन्यका रछेयि वनक्येव ऋटेषौ ।
रवअरिथ नियरव ड़न्ड़रव वन ।।

170 सीतायि ओसुयि सोन सुन्द केशो ।
सोरिव तप ऋटेषव सदाशिव ।।

171 वोशनारि वुज़ लिव मूला दतियेय ।
लोह पूचि वेल वोत कन्य श्रानस ।।

172 पीरे तल प्येमेयि मरेद रअरवयि ।
हकय आयि भवानि ज़ाफल हेथ ।।

173 कूंजन चोरन कन्यकय चोरय ।
मोल तय गोर छुयि गुड़ दिवान ।।

174 वोशनारि वुशिन्प्रेवमय गङ्ग. वोन्नीय ।
मधमति चोनुय करुस कनि श्राण ।।

175 कनि श्राण कोरयेय मे त पिलवाजे ।
लोकचे माजे लोल बोरयेय ।।

176 तनि मलोयेय गूह, कोश त ओटुय ।
सअचि़ आव पश्मीन पोटुय हेथ ।।

177 वल मालि सूचो़ खसु सानि हेरे ।
वरदन जोरे प्रारान छिय ।।

178 सूच़न अनीय पअरिथ अतलास जाम्मय ।
सूच़स क्याह पजि़ येनामय ।।

179 माम जूवन अनिनय जाम जूरि पारिथ ।
शाम सोन्दरी शान रोज़ दअरिथ ।।

180 सेरि रस वान्नि सअति तन छलययेयि ।
अद हावययेय अग्नय कोण्ड़ ।।

181 कनि श्राण करिथ गोरस चा़यखय ।
आयिखय इन्दो करने किच़ ।।

182 महाराज सअबुन गुर गण्ड़ बागस ।
बड़ि ब्रह्मण लाग दातस ट्योक ।।

183 ट्योक प्रज़ोलुयि डेक वोज़ोलुयि ।
मोललुयि गन्डुस कअंकनि बन्ध ।।

184 डेकस टेकिस कअंकनि बन्धस ।
मोजय वन्दुस चन्दन तन ।।

185 पननिस बब सअन्ज़ि गज़ख तीरी ।
पीरि पेठ करयेय कन्य संसकार ।।

186 थाल टूर ओनमय गोजे वारे ।
डेजहूर ओनमुय वेजिब्रारे ।

187 बबन द्युतुयि थाल टूर गोरन मन्सोकुय ।
कूरेय करयेय कन्य संसकार ।।

188 आयसतानस कोरमय साये ।
वुनिकेन पज़नय वायन वअलि ।।

189 दअंतन सअति सुम कडयोय ।
रुम गन्ड़योय नअरिवन सअति ।।

190 दिवतगुलि वअटिथय वरि तय हन्दे ।
गरि वटिन हरि चन्दराज़ने ।।

191 माजि भवानी लोदुय प्रअप्यअनुय ।
लअर ब्योल तय छतरय हार ।।

192 हावसि प्रअप्युन चोटुयि थावुस ।
त्रावुस गौसअ तय बोजुस वीद ।।

193 बबन पननि दियुतुयै नालय चोटये ।
शारिकायि कोरनस अथरोटुयि ।।

194 डुंग दिय सअदरस, लाल खारि बोठुयि ।
कूरेय कर्म-लोन चोन पोठुये द्राव ।।

195 क्याजि़ छेक गमगीन राम-राम मोठुये ।
कूरि कर्म-लोन चोन पोठुये द्राव ।।

196 मअजि पअरि लजियो कुकिलि-हटिस ।
विगिनि चोटिस प्रारान छिय ।।

197 यज़मन बाय करान आये त पाये ।
जानावर बीठिस जाये पेठ ।।

198 हशि नोशि अछ़य रछ़य ।
दिवगोनस खअचयि प्रअप्युन हेथ ।।

199 यकलय पेठची कुकिले हअरी ।
सन्यवअरी त्राव पअत्रय चाल ।।

200 दिवगोन मोकलअविथ अथि फोल रटिव मालि
खेयिव मालि पादशाह बागचि दछ ।।



दिवत गूलि

201 दिवत गूलि वटिथय वरि तय हन्दे ।
घरि वटिथ हरि चन्दराज़ने ।।

202 नेमिथ वटिथय दिवतय गूलि ।
समिथ वसवय यारय बल ।।

203 दिवत गूलेन थाल चोनूथयि ।
लाल ज़ोवुयि रंग बअलिये ।।

204 दिवत गूलि वअलिथय बड़ि दरवाज़य ।
राज़य गणीश सअत्य सूत्यती ह्मेथ ।।

205 दिवतय गूलेन सअति सअति शमाह ।
बोंठ-बोंठ ब्रह्मा वीद परान ।।

206 अर्ग बरिथ तरंगहन, सेन्दरि बरिथ पूचिहन ।
इन्द्र सअन्ज़ि नोश वअछ़ यारय बल ।।

207 दिवतय गूलेन अलुन त वलुन ।
फोलुन त प्रेसेर लअगिनव ।।

208 वेतस्ता मोजी छेमय चअनि लादन ।
ब आयेस चानेन पादन तल ।।

209 खोरन लअजिथय् पुलहअरि-दानी ।
रअनि वअछ़ यारबल पोनि च़टने ।।

210 च़ोट त्राव कोलि तय लव दिय खोरन ।
दौरन खवअच़रवयि होदशीश ह्येथ ।।

211 वेतस्ता मोजी बो़छि हय लजिम ।
कोछि लाल दितम घर गछ़हा ।।

212 जून खवअच़ ढ़बे असि वअति पनने लबे तल ।
जून खवअच़ यज़मन सन्ज़े ढ़बे असि वअति
पऩने लबे तल ।।



मस पारनस वनवुन

213 कंधन्या अन्निमय छानय वानय ।
मोत्तय दानय जरअसे ।।

214 गछ़ित अनिनय बबन पननि-पानय ।
बोय पनुन ब्यूठुयि सोनरि-वान ।।

215 सोनरयो सोन ज़रुस खान ब खानय ।
मोत्तय दानय जरअसे ।।

216 सोन सअन्ज़ि कंघने ज़ठ वालय ।
अठ पारय फलिल सअति ।।

217 ज़ठ वालमय रूमय-रूमय ।
छेरवय मोसूमयि ख्वोन्नि ललवथ ।।

218 ज़अविलेन रूमन सुम सेज़ द्रायी ।
शारिका आई वअँकअ पारने ।।

219 कूरि पारयेय पअटिव वअँकय ।
गाटजि कूर गछ़ि वअरिवुयि ।।

220 वअँक पारयेय फलिल त हिये ।
यूरि हय यियि चोन अर्ज़न दीव ।।

221 कूरि पारयेय बादाम वअँकय ।
आदन कूर गछ़ि वअरिवुयि ।।

222 कूरि पारयेय ख्वँजर वअँकय ।
पँजर हूर गछ़ि वअरिवुयि ।।

223 निचि-निचि ज़ालि वँअक पअटिपन पारयेय ।
तारयेय लोहवरियुक बुहरी साज़ ।।

224 बबस त माजि हुन्द पत पत सारयय ।
रोगनी कुलिच त कम कम नाज़ ।।

225 बअडि–दोह लोकि दोह वारिव चानि गारयेय ।
तारयेय लोहवरियुक बुहरी साज़ ।।

226 सोमन कपसा ववनय आये ।
सानि माहशेनि हन्जि़ यछ़ाये ।।

227 वासदीव राजनेन ड़ारन द्राये ।
चूर दिनि आये गअसि–बाये ।।

228 शबनम लवि सअति फलित आये ।
सानि माहरेनि हन्जि़ यछ़ाये ।।



तरँगअ गँडनस वनवुन

229 माँसव कोतुयि तोमस फोतुयि ।
पोफव कोतुयि कलाबोत ।।

230 रथि व़ोथ तोस तय अथि व्यसनोवमय ।
तथि करनोवमय तरँगहन ।।

231 अअठ गज़ तरगँ शेठ गज़ तोर छुयि ।
तमि कुयि ज़र शोल दिवान ।।

232 येति गयस वोवरिवान अथि हेथ प्रचि़हन ।
तअथि ओनुम पलदार तरँग हन ।।

233 तरँग ओनमय गाह लोग त्रावने ।
ताह कोस्स माजि रअग्न्याये ।।

234 मअज भवअनि आयि हेथ मन्ज़ि भवसरिये ।
अथस केथ ज़रिये तरँगा हेथ ।।

235 तरँगस चअन्निस दछिन पोछ़ये ।
यछ़िथ सूजुयि माजि भवआनी ।।

236 तरँगस चअन्निस सोन सअन्ज़ टेकय ।
ड़ेकय बअड़ये नीरीज़ेम ।।

237 तरँगस चअन्निस सोन कलाये ।
दूर बलाये गअछ़िनय ।।

238 धोबि ओनुयि मायि दार वोवुरि ओनुयि तारे दार
भरव्तावार कूरी गन्ड़ि तरँग हन ।।

239 तरँगस जअरिमय अरतलि वथर ।
शत्र पेयी पादन तल ।।

240 जूजा अनिमय वोवुरि वानय ।
वोवुर योत आव पानय हेथ ।।

241 ज़ोजे चाने सोन जरनोवमय ।
घरि वननोवमय अन्द वअतिनय ।।



कोरि लग्नस वनवुन

242 वुशक्र् द्रायि हेलि तय दात्रि लोग पूरे ।
दूरयुक येनिवोल कर वाते ।।

243 पूरे कने खोतखो सिरियो ।
पश्चिम कुनुयि ज़अच़यि त्राव ।।

244 कोह तल सिरियो द्राखो नोनुयि ।
ब्रह्मा कुनुयि सूज़मय ।।

245 पूरे कन्ये नबि कोर वोदय ।
द्रे सोनसुन्द बोदय आव ।।

246 शेन्क शब्द बूज़मय वेथि अपारे ।
गोंद प्रज़नोवमय वेजिब्रारे ।।

247 खनबल सोदागार वथिये नावे ।
मोत्तय दावे मोल करने ।।

248 तल छुयि मसनन्द पत्त छुयि तकिये ।
सखिये सोसि आयि ड़खि नावनय ।।

249 नाव पेचि रथि तय नाव पेचि वारय ।
नाव पेचि कदलय तार दिवान ।।

250 हँअज़व कोरहय द्रोब वायोनुय ।
होवहय वोमायि हुन्द जायोनुय ।।

251 सोन सअन्ज़ि नावे रोप सुन्द हम छुयि ।
नम रट गणपत सअबुन कुन ।।

252 वेथ बलि आहम वेथ वोन्न छपनयि ।
होहवअरि दपनय शाहज़ाद आव ।।

253 कन कड़ कनवाजि लाय असमानस ।
खूम दिव रूम किस मअदानस ।।

254 ड़ायि सास लुख आयि पोश वेमानस ।
छुखय दामानस मोत्तय दोव ।।

255 आव माहराज़ तय पोक मअदअनी ।
खोत असमअनी गरदि गुबार ।।

256 ज़रबाफ वयुरमय वते-वते ।
कामदीव शाम सूरते आव ।।

257 ज़रबाफ वथुरमय दोरे-दोरे ।
प्यठय बानचे कोरे आव ।।

258 समन्दरस सोथ द्युत चन्दन लते ।
शेव नाथ सून्दे वते आव ।।

259 समन्दरस सोथ दियुत क्रम ओतारी ।
राम जू रथ सवारी आव़ ।।

260 राज़पोत्र शूरवान शूभिनय खोरन ।
गाह प्योव दारेन त दरवाज़न ।।

261 छतरस चअनिस मोत्कव ज़ोलुयि ।
इन्द्राजुन येतिवोलुयि आव ।।

262 हसित्येन चानेन सोन अम्बारी ।
प्रिछ़ितोस कमि शहअरी आव ।।

263 शब रोज़ वुछमय तारख खसान ।
वनतो घर कति आसान छुयि ।।

264 घरि पननि वुछमरव मोटरस खसान ।
होहवुरि वुछमरव बोन वसान ।।

265 हशि पननि वुछनरव सिरिय ज़न खसान ।
वनतो घर कति आसान छुयि ।।

266 सोनअ दस्तारस मोत्क जरययो ।
येथ घर वथ कम्यू हअवयो ।।

267 ओर आव यज़मन सुन्द येनिवोलुयि ।
बंगअलि नावन त पोश परदन ।।

268 योर द्रास कोरि मोल सोन सोवुयि ।
येथ घर वथ कमि हअवयो ।।

269 तेंलि कोनअ आयाख येथ बाज़ारस ।
येलि असि सोन ओस दस्तारस ।।

270 बब पनुन द्रावुयि प्रथ बाज़ारस ।
कोरि हुन्द लोन कुनि मेलेमना ।।

271 युथ लाल छु मेलान खाल कुनि शहरस ।
येलि असि सोन ओस दस्तारस ।।

272 मत वुछि तअ सअन्निस डुंगडुलालस ।
वुछितव अज़िकिस हालस कुन ।।

273 युथ अअसि करान वोहरवअदि सालस ।
येलि असि सोन ओस दस्तारस ।।

274 आव महाराज़ तय पोक दम-दमय ।
कुलेन पन प्योव ज़म-ज़मय ।।

275 अड़ि आयि वोरवलि तय अड़ि आयि नावन ।
हावस गीर आयि ख्रावन पेठ ।।

276 बागस सअन्निस गुल गअयि ताज़य ।
सोन-कोरि मोक्त महाराज़ हय आव ।।

277 दक्ष–प्रजापतनी कूरि कोमारी ।
त्रोभवन ओयय ओंब्रअरिये ।।

278 कूरेय लोन चोन कोरमय सही ।
साक्षात महीश्वर हय आव ।।

279 मोजि छेयि करान नही–नही ।
बबन कोरनय सही कार ।।

280 कअसि नायि अथि आयि लानिन्न बही ।
साक्षात महीश्वर हय आव ।।

281 वुछमय न ज़ातकस प्रिछ़मय न क्रअन्निस ।
कूरेय लअन्निस नमस्कार ।।

282 प्रिछ़मय न मातामालकिस क्रअनिस ।
ज़ेरि अकि लोन गोव ज़ोरावार ।।

283 कूर नेरि ड़ेक–बअड़ शूभ यियि क्रअनिस ।
कूरेय लअनिस नमस्कार ।।

284 कोरि–वोल सोन क्याह–क्याह लोग सोरने ।
येनिवोल वोतुस बरने तल ।।

285 दशरथ राज़अ आव कश तीर त्रावान ।
कौशेल्या माता छि वत शेरान ।।

286 आव महाराज़ तय च़ाव बजि दोरे ।
मोत्कुव छत्र छुस लोरे पेठ ।।

287 आखा मालि वासदीव राज़नि कोरे ।
बेनि आरव कृष्ण जूवने ।।

288 अमीर तय अशराफ मारान जोरे ।
मोत्कुव छत्र छुस लोरे पेठ ।।

289 आव महाराज़ तय च़ाव बजि बरने ।
पाट-पूथि वअलितोस परने किछ़ ।।

290 च़ारवो मालि वासदीव राज़नि बरने ।
गोबुर छुरवो दशरथ राजुनयि ।।

291 ज़नक राज़नि कोरि आरव वरने ।
पाट-पूथि वअलितोस परने किछ़ ।।

292 ऑंगन च़ारवा मालि लग्नकि हीतय ।
भूतन दियिव मालि रतय छेपि ।।

293 वअरिविच पोंपुर येलि ह्मोर खसि ।
अद वसि रामस निश सीता ।।

294 ओर आव नाराण असि लोग शेरे ।
नेरूसे नरि पान आलोसे ।।

295 व्यूग छुयि लीखित सोमि–सोमि जाये ।
शाये कृष्ण ज़ूवने ।।

296 ओरय ओई साहिब दौलत ।
योरय नेरुस आलथ हेथ ।।

297 रत्नय सरस दिच़थम डालै ।
रत्नय च़अँगिस आलोसे ।।

298 वुदअ ज़ोलोयो माजि ज़ालाये ।
नाबद आपरुयि मीनाये ।।

299 सोन्नि–सोन्नि बीठिवो मन्ज़ पुशवारे ।
सन्ज़ लोग हारि तय बुलबुलस ।।

300 सोन्नि च़ाव आँगन सोन सन्ज़ वतय ।
सोन्निस ति मोकल्योव अतयगत ।।

301 सोन्नि च़ाव आँगन जागिर गामन ।
जामन वुछितोस ज़ेबअई ।।

302 सोन्नि च़ाव आँगन वथरोस पेन्जे ।
लन्जि सान ज़ाफल बदलअवितोस ।।

303 सोन्नि मोल गोबरो सोन्नि चअनि किवये ।
सोन्निस ति सोन वाजि मअनिये क्रंअक ।।

304 सिरीय आव सतन हसित्येन खसिथ ।
वसिथ कअरितोस दारय पूज़ ।।

305 हिये फोजिखयि वोगन्येन बालन ।
पुश वअजिखयि पोशमालन सअति ।।

306 कूरेयि खअचख़यि तुलिमुलि नालन ।
बब छुयि मालन चूनि जरान ।।

307 माम छुयि दपान बुयि कोछि वालन ।
पुश वअजिखयि पोशमालन सअति ।।

308 द्वार-पूज़ करु मालि व्यश कुमारे ।
वार-पूज़ करु मालि सालिग्रामस ।।

309 पोश पूज़ करु मालि दारि त हँगस ।
अअलि त रोंगस द्वारय पूज़ ।।

310 हारि कर द्वार पूज़ सअति अलल खानस ।
भुमि कमानस सेन्दरे ट्योक ।।

311 मोक्त चव ड़ोलस तरव्तअ खानस ।
ट्योक लाग पादशाह देवानस ।।

312 त्रे-लर बब सन्ज़ि त्रे-लर हेहरस ।
शु-लोर योन्या प्रोवयो ।।

313 पोश रठ दअछिनि योनि फिर खोवअरि ।
होवरि हँगस पूज़ा कर ।।

314 योन्येस, टेकिस त कअँकनि बंधस ।
मोजय वन्दुस चन्दन तन ।।

315 ओर आयि सतर्क्टेष, योर द्रायि पांण्डव ।
खसिव मालि मण्डुल छुव वाहरअविथ ।।

316 अनु मालि पुशोव बबरे लोवुयि ।
सोव खसि हेरे त वथरअवितोस ।।

317 नन्दन्यो आहम लग्नस पअनी ।
चन्दनुव खारयो ज़अनी हेर ।।

318 धर्म हेरि खोतखो भ्रम दिथ छ़ाये ।
छ़ाँडान कर्म–लीखाये आख ।।

319 सोठकह हेरि खोतखो पठकह दिथ छ़ाये ।
छ़ाँडान ईश्वर मायाये ।।

320 हेरि छेयि सेन्दर हेर दअँतुवुयि ।
हेरि छु खसान देवादेव ।।

321 दिदरि छि बोलान प्रातः कालस ।
असि मसनन्द कोर लालस क्युित ।।

322 मारपेच हुकय कअलनि बरदार ।
यिमय सरदार बीठि दरिचेन पेठ ।।

323 काकन हअँजि़ काकय हअरी ।
वअरिव चअन्नि बीठि ताकन पेठ ।।

324 बबन हँअजि़ बबथ हअरी ।
वअरिव चअन्नि बीठि गबन पेठ ।।

325 रंगरेव अमियि पअटि रंगनअविथ ।
अड़ि किरिमज़ तय गुलि अनअरि ।।

326 सतरन्जि छ़ोचि तय कअलीन ज़ीठी ।
बागस बीठी सोदागर ।।

327 तल फम्ब फोत तय पेठ डुरे खासा ।
सभि वथरअवितव अतलासा ।।

328 छोन्न गोयि रोन्नेन तय रोप ज़ंगोलन ।
वथरयि पादशाह बन्गलन पेठ ।।

329 छहमयि बबस त माजि हँज़ वज़ीर ।
वथरयि खज़र कुलिनयि तल ।।

330 छहमयि बबस त माजि हँज़ आदन ।
वथरीय बादाम कुलिनयि तल ।।

331 असि क्या तोहि क्युित रोनमुत आसे ।
हअँज़नि दोग दितअ सोरव दासे ।।

332 असि मालि रोनवो सरतील बानन ।
तोहि लेल बानन ज़ियाफत ।।

333 खासन क्यिुत रोन भासमति पोलाव ।
मेत्रन किच़ रन्नि छतरय हार ।।

334 वअँकय लन्जेन मोत्क जरैयोय ।
क्रेजँन भासमत फीरैयेय ।।

335 असि रअछि कूरा तप करि-करियैय ।
भत-थाल शीरिज़्येव बरि बरियैय ।।

336 थालन भत त खासेन दाल छव ।
साल छुवो कोरि हन्दि मालिने ।।

337 बागकि ओलव ड़लकि नदरी ।
दिदरी बब छियि सभ हारान ।।

338 नीरि वोल वोपल हाक चीरि लोग पाकस ।
ख्येयिव मालि भतन्हान हाकस सअति ।।

339 असि कअर तोहि किच़ कोंग तरकअरी ।
ख्येयिव मालि रोंग चअरि-चअरिये ।।

340 असि कअर तोहि किच़ अअल तरकअरी ।
मअल सान ख्येयिव मालि च़अरि-च़अरी ।।

341 दाला-भता, नदरि मिसकाला ।
ऋटेषन हुन्द साला छुव गनीमत ।।

342 बाग मन्ज़ लीसअ अन्नि रअमि संभाये ।
चम्बा-नाथनि येछ़ाये ।।

343 हर गुपालस वकील सरदारस ।
राज़स कति आथि दिवता बोद्द ।।

344 बानहालि पेठ आव चम्बा नाथ तरिथ ।
दालि हुन्द इन्तिज़ाम करिथ द्राव ।।

345 ऋटेष कन्यकन हुन्द कोरुन वोपाये ।
चम्बा नाथनि येछ़ाये ।।

346 आनन्द कौलन कअड़ चामन क्राये ।
सिरी कौलन दोपुस छाये थव ।।

347 मलखाह मन्ज़य कुननय आये ।
चम्बा नाथनि येछ़ाये ।।

348 वासदीव राज़नि सोदय ब्रारयो ।
दोद बुरानि वुछ साद क्या छुस ।।

349 असि कअर राज़न सअति बन्ध-दारी ।
वाज़न सअति फीर भवानी ।।

350 कृष्ण जी भायो रस फिर नारे ।
वातनाव हारे हन्देन वअरिवेन ।।

351 दोसि पेठ कअरमय पोशि लन्जि मिलवन ।
त्रेशि कनि दि्युतमय अमृत चोन ।।

352 रअयि चअनि वोदनी त ब्अयि चअनि गन्दरी ।
सोन्दरी बब छिय सभ होरान ।।

353 अथ छलुन दि्युतमय अमृत वोनी ।
तुजि करिन दिच़मय चन्दन लू्श ।।

354 वअँगिस खोत छय पोंपर ज़ीठयि ।
लग्नस बीठयि चे़न्तामन ।।

355 कूरेय बीठखय लग्न किस थानस ।
करि भगवानस नमस्कार ।।

356 खस अग्न मण्ड़लिस बेह सरस्वतिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

357 कैलास कोहकि यिमय सूरमतिये ।
वोलास गअण्ड़ि गअण्ड़ि आँगन च़ायि ।।

358 आकाश वअथि किन पाताल खअतिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

359 महाराज़ आयाव ताक दारि पतिये ।
गुरेन छिय गौंदि तय शुरेन गअजगाह ।।

360 असि गअयि हुशार शेन्ख शब्द सअतिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

361 वीगिस खअच़ख्य मोज पारवतिये ।
शेरस सअति रोज़ि बराबर ।।

362 नाबद आपरुयि मीनावतिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

363 द्वारपूज़ि खअच़ख्य मोज भगवतिये ।
वारअ रोज़ नख छुयिं पान भगवान ।।

364 चन्दनकिस द्वारस सेन्दरि टेकि खतिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

365 खसवुन तेल वोहरुयि गोर हेतिये ।
तमि सअति असुरन वसि अंधकार ।।

366 लसि महाराज़ सोन यियि ब्रूठि-पतिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

367 लग्नस बीठखय मोज पारवतिये ।
अग्नस कुन रोज़ अथ दअरिथ ।।

368 अग्नकि रअति फल तोहि दोन कितिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

369 पारन डूनि रअटि मोज पारवतिये ।
कारण बूज़्य-बूज़्य हलमा दार ।।

370 हशि तय हेहरस नीरिनय हेतिये ।
लतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

371 नाव मालि कअरिज़ेस श्री सरस्पतिये ।
भाव मालि कअरिज़ेस छय संसार ।।

372 नोशि कनि वअचयि साक्षात सतिये ।
सतिये वोतुयि वेवाह कार ।।

373 सुलि वोथि पुशनेय विलि खयि बालस ।
लालस किच़ वाल मन्दन-माल ।।

374 पुशनय खवअच़खय अमरनाथ नालस ।
नति छिय फअलिमित नाना-रंग पोश ।।

375 अडि भरि जनथरि अडि भरि नालस ।
लालस किच़ वाल मन्दन-माल ।।

376 मन्दन-मालि चानि सुखि जरैयो ।
रखि आपरोयो नाबद हन ।।

377 मन्दन मालि चानि लाल जरैयो ।
साल छेखय पननिस बेम-सअबनि ।।

378 मन्दन-मालि चानि रोन्नि जरैयो
बेनि छेखय पननिस भअइसअबनि ।।

379 मन्दन-मालि चानि दूर जरैयो ।
कूर छेखय पननिस बब-सअबनि ।।

380 मन्दन-मालि गण्डुस केसर-दस्तारस ।
थदि कुठे वथुरुस सबज़ारस ।।

381 मन्दन-मालि चानि सोन सअन्ज़ टेकै ।
डेकै बअडयि नीरिज़ेम ।।

382 मन्दन-माल गण्डयो सोभद्राये ।
अर्जनदीवनि भअययि ।।

383 मन्दन-मालि चाने ज़न्गि कुस ओयो ।
मगँला दीवी त नन्दकीश्वर ।।

384 सोमन कुमार मालि काछि हेच़यि ।
तच़यि मोहरा नेशवान ।।

385 कूर छेयि कोछि तय पुस्तक परान ।
महाराज़ छुसय अथ दारान ।।

386 कन्य-दान कोरयो मालि दशरावनो ।
भूमि-दान रोटथो मालि ब्रह्मणो ।।

387 थदि कुठे थवमय दुर्गा नाविथ ।
न्यून ब्रह्मण प्रति पालिथ क्या ।।

388 शरिका आँगन थअवमय वातनअविय ।
तति रोज़ अथ ज़य दअरिथ क्या ।।

389 खिर-हनि खण्ड़-हनि प्रअप्चुन हअविथ ।
न्यून ब्रह्मण प्रति पालिथ क्या ।।

390 थालचि ठिव-ठिव बोलाकि वादा ।
राधा-कृष्ण जू दान हेनि आव ।।

391 युस करि माघ श्राण नेथ पूज़ि सालिग्राम ।
सुवि करि सत वुहुर कन्या-दान ।।

392 युस दियि माघ मअसि काँगर शिशरस ।
ईश्वरस निश वाति राज़-कुमार ।।

393 वेथि हुन्द यावुन हार तय श्रावुन ।
कोरि हुन्द यावुन बब तय मोज ।।

394 रूजिथ गअण्डमय धर्ब डेटौनुय ।
बूज़िथ ईशर सोनयि आव ।।

395 नीलय वटस ख्वोर चोनथय ।
गोर ज़ोनथय परमीश्वर ।।

396 कूरि कोमअरी माम जू डखि छुयि ।
नखि छुयि चोतुर भोज़ नारायण ।।

397 युस बोय रोछथन नरवस त कोछे ।
सुयि बोय खोतयेम लाये बोय ।।

398 योस बेनि रअछथन नरवस त कोछे ।
सोयि बेनि खअच़येय गंगय वेस ।।

399 लाय बायि लायो लाय छरव दोछे ।
जमना बेनि गछ़ि वारिवय ।।

400 गंग वेस जंगि आयि हेथ गङ्ग वोन्नी
लायि बोय सोन छुयि ज़ायोनुय ।।

401 येति दिज़ि कोङ्ग मोण्ड तति नाय तअछिजे़ ।
कूर नायि रअछिजे़न लुक हुन्द माल ।।

402 लग्न छी करान कअनी अन्दरी ।
सोन्दरी रअूफ चोन सिरियस प्रव ।।

403 लग्न छी नवि लरि ताकस ।
बोलाय ग्राकस नसत–वाजे ।।

404 हअर छेय दपान यि छि म्यअनि बूली ।
शब्द बूजुयि पोश–नूलिये ।।

405 लोहूरि तोतो कश्मीर हअरी ।
तोहि दोन कति गयि पअरीज़ान ।।

406 दिमयेय कूरि रत्न त दाजे ।
फेरि कूरि वाजि अथ–वास करिथ ।।

407 युथ कूरि रअछिनरव पनन्ने माजे ।
त्युथ नायि हेकिये काँह ति रछिथ ।।

408 चेनि हय दिच़नय शेयित्रिह नाजे ।
फेरि कूरि वाजि अथ–वास करिथ ।।

409 युथ कूरि रअछरवय मासि पोफि माजे ।
त्युथ नायि हेकिये काँह ति रछिथ ।।

410 रवेन्नि दितिनय रवंड रवअसि चेन्नि दोद पाजे ।
फेरि कूरि वाजि अथ वास करिथ ।।

411 अथवास करान अथ रठ चीरय ।
कथ कर सीरय बोजिस सअति ।।

412 आकाश ब्रअरी कूँश लागि खोरन ।
पोदिच दिय हेहर सअन्देन मोहरन पेठ ।।

413 सतवयि मोहख पेठि पकनअवमख ।
वअरिविक गुथरय तारनअवमख ।।

414 आईन हअविथ रूप छिये रअतिये ।
अग्नन दितुये शीतल सोभाव ।।

415 हाथी पोरअचि चअँदि अननअवमय ।
तअथि गरनोवमय दय-भत थाल ।।

416 दय भत थालस सोन सअन्दि खूरी ।
कूरी खारयेय दय-भत थाल ।।

417 वुरबल वअनितव लोकटिस वाज़स ।
राज़स खारिहे दय-भत थाल ।।

418 दय-भत खोरमय चरकी थालस ।
सोदगुलालस मधुमति क्युत ।।

419 गोरि हअन्दि अनितव दोद च़ोड़वअरिय ।
सोरुय दामा चेतमो ।।

420 त्रेथि कनि द्युतमय अमृत वोन्नी ।
तुजि करनि दिच़मय च़न्दन लिश ।।

421 माजि हअन्जि़ बबि तल चो–थय वुगवोन्नी ।
राज़ घर गछ़खय मगँलअनिये ।।

422 यान्न कूरि गोरनय दारि मन्ज़ोलयि ।
तान्न कूरि वअरिव्युक चो़लुयि आव ।।



पोश–पूज़ा

423 ॐ कर श्लोक पर श्री गणेशाये ।
पोश पूज़ाये वेल हय वोथ ।।

424 येति पेठ गअयसय माजि रअग्न्याये ।
प्रतिक्षण दिमस भावनाये सान ।।

425 भूतीश्वर वोलमुत तअसन्ज़े माये ।
पोश पूज़ाये वेल हय वोथ ।।

426 मोक्त कनि ताख छिमय तापदानस ।
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।

427 ड़ेकस पेठ चंद्रम तस तीज़वानस ।
बुथिस छुस करोर सिरियुक रूप ।।

428 छेस दया गुलि गण्डित तस दयावानस ।
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।

429 आकाश पोश वर्षुण हनि-हनि छुस ।
रथबान कनि छुस सिरी दीवता ।।

430 सायबान द्य़ुतमुत छुख असमानस ।
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।

431 लालन हुन्दयि मोक्तहार नअलि छुस ।
वाव लूकपाल करान गअजि-गाह ।।

432 लक्षमी मीठी छेस दिवान दामानस ।
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।

433 सतज़न सतऋषेष सअति छिस पानस ।
च़ित्रगुप्त छुस ठेलि बरदार ।।

434 धर्मराज़ थोवनय पेठ धर्म वानस ।
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।

435 गंगा सागर हेथ गंगा छेस ।
वुदअ ज़ालान छेस कर्मलीखा ।।

436 घट च़अजि त गाश आव सअरिसियि जहानस
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।

437 जन्गि थाल अनस अष्टसेदा छेस ।
व्यूग लेखान छेस महा वेद्या ।।

438 रथ छिख गअण्डिमति मन्ज़ मअदानस ।
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।

439 ईन्द्र–लूक दीव लूक सअति छिस पानस ।
सोरुयि स्वर्गय स्वर्गय दार ।।

440 सरस्वती दोद मोज सअति जंअपानस ।
छेमय ईशानस पोश पूज़ा ।।



शंकर पूज़ा

441 भाव पम्पोश फअलि प्रेयमय सरसयि ।
शिव शंकर सयि छे पोश पूज़ा ।।

442 गौड आदिन्दीवस जै जै कअरी ।
गुड़ दिस छेस अनवअरी ब्रोंठ ।।
गणिश–बल ज़ल हिलि मूसल दरसयि ।
लम्बोदरसयि छे पोश पूज़ा ।।

443 शिव ध्यान दारुन वीद वेस्तारुन ।
अमृत हारन कारण दीव ।
वैकुण्ठ सम्पुन्न सअनिस घरसयि ।
रामेश्वरसयि छे पोश पूज़ा ।।

444 सोयम गछ़िय प्रेयम बरसयि ।
काल नअगिन रूद्रस त भद्रकअली ।
पूज़ नेश्कल कल माला दरसयि ।
हरीहरसयि छे पोश पूज़ा ।।

445 शेव-राग कारकूट नाग-पाठ परसयि ।
पापहरन नाग हरनम अपराध ।
भीमसीननि पाट सअति हरधरसयि ।
नागेश्वरसयि छे पोश पूज़ा ।।

446 नाग-नाग फेर कोत येथ भवसरसयि ।
नागेश्वरस लाग मन त प्राण ।
मन किस मन्दरस पूज़ा करसयि ।
श्री जटादरसयि छे पोश पूज़ा ।।

447 त्रेन हुन्द सन्ज़ कर नेथ वुथ दरसयि ।
त्रेनवनि भअविनरव पादि प्रणाम ।
सोन्द ब्रारि वन्द पान शामन्सोन्दरसयि ।
तीर्थ पोशकरसयि छे पोश पूज़ा ।।

448 खिर, खन्ड, कन्द सअति थाला भरसयि ।
प्रेयम सअति आपरस वन्दयो पान ।
नील कण्ठस दिगम्बरसयि ।
सर्पादरसयि छे पोश पूज़ा ।।

449 नवदल कल वन्द अमरीश्वरसयि ।
थअजिवारि कर शंकरसयि पूज़ ।
दिम वेजब्रारि प्रकरम च़कदरसयि ।
विजेश्वरसयि छे पोश पूज़ा ।।

450 बाल पेठ तुतलाई तोता करसयि ।
अनन्तनाग कर माघ मासय श्राण ।
श्राप च़लि इन्दरस गोव आश्च़रसयि ।
वेशम्बरसयि छे पोश पूज़ा ।।

451 अर्ग-पोश बर्गशेखा पूज़ा करसयि ।
मटन वअत्तिथ हटन अपराध ।
मोक्ष पेत्रन गछि क्षणमातरसयि ।
सिरी-भास्करसयि छे पोश पूज़ा ।।

452 बाल पेठ प्रेयम पोश माल हेथ तरसयि ।
सतशायि उमायि पूज़ायि लाग ।
तथ नागस ब प्रकरम करसयि ।
उमादरसयि छे पोश पूज़ा ।।

453 कूठिहेर अन्दि-अन्दि फेर तथ सरसयि ।
कूठी तीर्थस छुयि महिमा ।
आश थव शंकर शननिस वरसयि ।
ब्रशभादरसयि छे पोश पूज़ा ।।

454 दिवस्थलिये छेयि दिवसरसयि ।
सारिनयि दिवयन छु पादि प्रणाम ।
वास्कनाग श्राण कर शम पम दरसयि ।
सोयकुण्ठश्वरसयि छे पोश पूज़ा ।।

455 कृपाल मूच़न भक्ति-भाव बरसयि ।
पाप क्षय गछ़िय परश्राप मूच़न ।
प्रावरनिस कृपाल माला दरसयि ।
गङ्गधरसयि छे पोश पूज़ा ।।

456 अर्ज़नदीवनिस युद्ध युधिष्ठरसयि ।
राजरेन्नि माजि रअगन्यायि कर पूज़ा ।
धूप-दीप आलवस च्यथ चामरसयि ।
भूतीश्वरसयि छे पोश पूज़ा ।।

457 पर्बत शारिकायि लीला परसयि ।
आदिदीव रछिमय बरसयि तल ।
कर ब प्रकरम च़करीश्वरसयि ।
वामदीव़श्वरसयि छे पोश पूज़ा ।।

458 रामराधन मन पूज़ा करसयि ।
हरमोख प्रारस बरसयि तल ।
भर्त बाल तरवात पेठ कोल सरसयि ।
भस्मसधरसयि छे पोश पूज़ा ।।

459 अमरनाथकिस निश अमरसयि ।
तीर्थ यात्रायि द्रायि हेथ पुण्य फल ।
सर्व तीर्थन हुन्द फल छु कश्मरसयि ।
मुक्तीश्वरसयि छे पोश पूज़ा ।।



भाव पम्पोश फलि प्रयमय सरसयि ।
शिव शंकरसयि छे पोश पूज़ा ।।

460 वेसि दोप तेसि कुन पोश फअलि बागस ।
थिमय खोश यिनमतय तिमय लागस ।।

461 परमीश्वरस तय माजि पारवतिये ।
लागस पूज़ि लव हतिये पोश ।।

462 तुलमुल गछ़हा माजि भगवतिये ।
रअगन्यायि नावस जय-जय कार ।।

463 शेरि बो लागस पम्पोश फतिये ।
लागस पूज़ि लव हतिये पोश ।।



कूर वअरिव नेरवुन वनवुन

464 लग्न पेठ वअजिमरव दानय दअजी ।
पोतरय मोजी नीरिज़ेम ।।

465 लग्न पेठ बअजिमरव नूनय कनियेः ।
वनि डेक प्रनिये नीरिज़ेम ।।

466 लग्न पेठ वअजिमरव ज़य करवनिये ।
तय करवनिये नीरिज़ेम ।।

467 सानि कोरि हअल छेयि वज़ीर पकुन ।
गज़ूर टकुन थविज़ेस ।।

468 सानि कोरि हअल छेयि पादशाह पकुन ।
नाबद टकुन थविज़ेस ।।

469 दार मालि पोम्पर कोछि कोमार छेम ।
प्रार मालि कूर छेम नेशेवान ।।

470 हअर छेयि पन्जरस तोर कुस वालेस ।
योर खसि तोतअ तय बोलिनावेस ।।

471 पोरव्तअ लरि द्रायिखय मोरव्तअ लरि चा़यिखय
वखत किन्न द्रायिखय भरव्तावार ।।

472 दारि किन्नि दिच़नम रुमाल दारिथ ।
अरिन्नि मन्ज़ नीयनम हीय च़अरिथ ।।

473 व्यीगिस च़अनिस शुराह गरय ।
मन्ज़य मरेद भरअयो ।।

474 तोतो ब्यूठखो नीलिस द्रमणस ।
हारि किछ़ थअविज़ेम नेमनस जायि ।।



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

भाग - २

नेच्चिव ख्वान्दर

महाराज़ नेरनस वनवुन

001 नअविदस नेन्द्र पेयि मसवलि बागस ।
आगस दअपितव वुज़नावेस ।।

002 वोस्तकार पकान वारय-वारय ।
वअनितोस कमि शहारश आव ।।

003 मस कासनस जन्ग अनोसे ।
नून-वरिहन तय मोहरा प्रास ।।

004 वोस्तकार दपान क्या कर वरिहनि ।
मैं गछ़ेम लरि हनि चूरिम पोर ।।

005 वोस्तकार दपान क्या कर नूनस ।
मैं गछ़ेम लरि हनि जूनय ड़ब

006 वोस्तकार दपान क्या कर तोमलस ।
मैं गछ़ेम शुमल त जोरे शाल ।।

007 वोस्तय कारो खूर टठ वारय ।
दाग पेठ वालय फम्ब-दस्तार ।।

008 वोस्तकार बायो अस्त-अस्त करुसो ।
छागिग ज़रुसो मोरव्तय हार ।।

009 खूरिस चअनिस सोन्ज़ तारय ।
ध्यारय हलमा भरययो ।।



पलव लागनस वनवुन

010 असवनि नीलकण्ठ सिरी भगवानो ।
रोप तनि गण्ड़्यो सोन जामय ।।

011 महाराज सअबुन होस मँगनोवमय ।
हअसितिस सोन साज़ करनोवमय ।।

012 तथ पेठ महाराज़ पानअ बेछामो ।
रोप तनि गण्ड़्यो सोन जामय ।।

013 तुलमुलि जग लोग ब्रग आयि सअरी ।
लोल चानि तीर लगि त्रावअनी ।।

014 तीर सोम्बरनि लअगि दिवता पानय ।
रोप तनि गण्ड़यो सोन जामय ।।

015 हरि हनि सअती बाग खन्यामो ।
वारि हनि सअति दि्युतमस सग ।।

016 चे़र त बादाम खसिथ आमो ।
रोप तनि गण्ड़यो सोन जामय ।।

017 ड़म्ब यलि लोगहम च़ति लेल बानो ।
मगँ लअजि चे़रन त गोर्दलेन ।।

018 बागुक बागवान ड़अलि हेथ आमो ।
रोप तनि गण्ड़यो सोन जामय ।।

019 महाराज सअबनि वोथ फराश खानो ।
रंग डूँगन कोरुन प्रंग वथरुन ।।

020 सुलि सूज़ लअलि क्युित अअन जंअपानो ।
रोप तनि गण्ड़यो सोन जामय ।।

021 सअदर मन्ज़ खोरमय लअदर दुरदानो ।
मोल छुस गोब तय तुल छुस लोत ।।

022 सोनमालि मन्ज़बाग छुयि शूभानो ।
रोप तनि गण्ड़्यो सोन जामय ।।

023 तोतो हारि वअनिज़ि कनतअलि पानो ।
ज़अम सअति कअम छेयि आदि अँथस ।।

024 ज़अम गछ़ि ज़अम ब्रान्द रोनि दामानो ।
रोप तनि गण्ड़्यो सोन जामय ।।

025 गण्डु डेटोनअयि खसु दरबारस ।
गछ़ु सरकारस खलथ मँगने ।।

026 खलथ छ़ाँड़नि द्राव हअकिम निशे ।
ब्रह्मा, वेष्ण त महेश्वर ।।

027 खलथा ओनमय ज़अनय कदलय ।
अदलयि महाराज़ सअबुनयि ।।

028 खलथा ओनमय अअदी-अअदी ।
सोरुयि जानाबअदिये ।।

029 सोमन कपसा ववतयि आये ।
कृष्ण महाराजनि यछ़ाये ।।

030 वासदीव राज़नेन ड़ारन द्राये ।
चूर दिनि आये ग्रअसि बाये ।।

031 शबनम लवि सअति फलिथ आये ।
कृष्ण महाराजनि यछ़ाये ।।

032 मांसव व्येसनुयि तोस फोतुयि ।
पोफव कोतुयि कलाबोत ।।

033 रथि वोथ तोस तय अथि व्येसनोवमय ।
तथि करनोवमय दस्तारहन ।।

034 येति गअयेस वोवरिवान अथि हेथ प्रचिहन ।
तथि करनोवमय दस्तारहन ।।

035 मअजि भवअनि आयि हेथ मन्ज़ि भवसरियो ।
अथस केथ ज़रिये दस्तार हेथ ।।

036 दस्तार ओनमय गाह त्रावोनुयि ।
ताह कोरुम माजि शारिकाये ।।

037 सोन दस्तारस दछिनि ओयि पोछुये ।
येछ़िय सूज़ूयि माजि भवअनी ।।

038 दाय कअमि द्यिुतयो विश्वामित्री ।
पेत्री गोण्ड़यो सोन दस्तार ।।

039 दस्तार गण्ड़नस जन्गि कुस ओयो ।
मँगला दीवी त नन्दकीश्वर ।।

040 व्यीगिचि जायि व्यस्तार लिवयो ।
अवतार कृष्ण जुवने ।।

041 कलमुक मीलि-फ्योर प्योयो मालि वरकस ।
राज़ ब्यूठ ख़कस व्यूग लेखवान ।।

042 कलमदानस दवात तअच़यि ।
कअच़यि गुमाशत छि व्यूग लेखवान ।।

043 अछ़ रछ़ बेनि ल्यूख कछ़कर व्यूगुयि ।
राजिरेनि माजि थव व्यीगिस प्रास ।।

044 व्यूग लेखोयो सते रंगे ।
कन्यक जन्गे अनोसे ।।

045 व्यीगिस कअरिमय शुराह घरय ।
मन्ज़े मरेद बरीयो ।।

046 ब्रांदस वसवुन करू सेदि-दाता ।
माता लक्ष्मी ज़ेनअनि छेयि ।।



लग्न चीरि वनवुन

047 दक्षप्रज़ापतुन ब्रह्ममुण आमुत ।
लग्नय चीरि तय ज़ाफल हेथ ।।

048 तति द्राव सुलि तय रथि वेमानस ।
योत वोत लक्ष्मी थानस पेठ ।।

049 ओरअ आव ब्रह्ममुण च़ाव द्वारिकाये ।
योरअ द्रायि दीवकी आलथ हेथ ।।

050 होहरयेव सूज़हय ब्रह्ममुण नादस ।
महाराज़ लालस त लूक लछेस ।।



राम-राम भजन

नेश्कल नेश्कामयए कर भजन राम-राम ।

051 रम्बा रामये, पानय यूरि आमये ।
रूदुम यथ गामय, कर भजन ।।

052 सुप्रकाश गोछ़ मैं ध्यानय, सूहम सुमरणय ।
चानि सअति फोलि में मनयए कर भजन ।।

053 संसार क्रूठ रगुयि, अथ दवा छुयि वेच़ार ।
पानसअयि निश सुच़ार वेच़ार कर भजन ।।

054 संसार कअरिज़ालय, सेठाहन वोलवय नालय ।
केन्ह रूदि अन्द खोशालय, महालय ।।

055 संसार सोपन माया, हवस पेठ छेयि काया ।
ठर पननि छेयि में छ़ाया सोकाया राम रामय ।

056 संसार दोख मोतुय, आयेयि योर कोतुयि ।
लारुन छु ब्येयि तोतुयि, सात-सात राम

057 अन्दरी अचु अन्दर, तति छु शेव मन्दर ।
तथ अन्दर शाम सोन्दर, बोलवुन राम

058 सुथि छुत-छुत सुये, तस क्या तानि नाव छुये
गोविन्द गोर छु पान दयेए कर ।।

059 असमान छेस ब प्यवान ज़मीन छुम दब लगान
तवय दवा छेस मगांन, भजन कर

060 वोमाओ मानि योहय, वोमाओ मनय ।
सूहम सू केंहन गमय भजन कर

061 योत यिथ क्या में कोरुम दय नाव कोनअसोरुम
जो़नुम न चूर फोरुम, कोवासना ।

062 वेचि़ क्या तस वनुन, यिमन जो़न जी़व पनुन
नार विजि़ क्रूर खनुन, भजन ।

063 मोगछ मोह भ्रमस लय थव सूहमस ।
सअँपअनि ज़्याद कमस भजन ।

064 रूपअ किनि नाव मनुष्य प्योम नफचुन गोम
गुदोम क्रूठ ती चा़लुन प्योम, भजन ।

065 मो गछ़ बाम्बरे, काल भय तन हरे ।
येति कुस घर करे भजन ।

066 गोर सुन्द ध्यान सोरुन तअसि पत वाति दरुन
सुयि गोव मान करुन अभिमान ।।

067 हा मन क्याजि़ ब्रअम्योख ।
क्रूघ निश कोन श्रम्योख
सतस प्येठ कोन नेम्योख, सतगोर ।।

068 करयोमय जा़रपारय, दया सागर दितम तारय ।
छु चोन नार वार वारय, तारवुन ।।

069 भक्तिस दया छु गारन, बल्कि तस पत लारन
लछ मन्ज़ तस छु चारन भजन ।।

070 दयो सोरुयि छु चोनुयि,वेचारयि योत छु म्योनुयि
सुयेय ज़ोन तअमि मोनुयि भजन ।।

071 गणपत छु ड़ीड़वोनी,थव च़ तस सअति ज़ानयि
तति छेयि मोज भवअनी, आदि शक्ति कर ।

072 मूर्ख मन गछ़ि मारुन, अम्यासचि हेरि खारुन ।
ज़ेरि ज़ेरि गछ़ि तारुन, ज़ेरि अकि ।।

073 मन गोव गावयि, गछ़ि द्युन धर्मसयि ।
वैतरनि दियि तारय, सुतारय ।।

074 पकुन गछ़ि बजि वते, सोर थव गोर कथे ।
रोवमुत यियि अथे, भजन ।।

075 ओंम गोव यरि वारय, ओमगोव परिकारय ।
ओम गोव रोज़गारय, सु तारय रामय ।।

076 दय नाव सोरिज़ि रसययिथनअ बोज़ि कांहठसय
वैष्णअ भवनस ब गछ़य भजन ।

077 सोदामुन कोम फोलुयि त्रेभवन हेथ सुयिच़ोलुयि
तोति तअमि लोग कोलुयि, नेश्बोद्व ।।

078 येति युस तोत गछ़ान, कहवचि पेठ छु खसान
प्रज़लिथ तति छुवसान, भजन ।

079 दूरि कथ जायि रुज़िथ बल्कि मेयमन्ज़च़बिहिथ
वेनती गछ़त बूज़िथ, भजन ।।

080 धूनुम फम्ब त कपस, सन्तोष गोव सथर ।
ब्रह्म गण्ड़ छु येन्दरे पन, भजन ।

081 ओम गोव येरि लूकय, ओं गोव परिलूकय ।
ओंम गोव लूक-लूकय, शोलूकय ।।



अपनी दिवंगत माता की
पुण्य स्मृति में यह भजन अर्पित है ।
ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

वीगिस नचुन

082 ज़ारव दिवकी रोछ़नरव जसदाये,
ज़ेन जाय चअनि मथराये ।
दशअ गन्जिनय यज़मन-बाये
असतानन त ब्येयि मन्दरन ।।
गाश आव दशि मुच़रन आये
ज़ेन जाय़ चअनि मथराये ।

083 दययन दितुख रोछुख नानि
में देदि कानि सेदेयम ।
ज़ाखा यज़मन बायि साने
चानि-चानि करान छेय ।
यादाश रूदया खानमालि म्यानि
में देदि कानि सेदेयम ।

084 सोनरि गोरुम कुण्दन सोनची वाजे
महाराज़ लालो लजियो पननि मअजि ।
येमि माजि दिच़नय शैत्रह दोदचि नाजे ।
तस माजि शूमन सोन टेकिताल वाजे ।।

085 सोन्दरो-सोन्दरो हा शाम सोन्दरो ।
नन्द बबन तप कोर गूकल अन्दरो ।
खोनि गोछ़ आसुन मेति गोबराह ।।
कृष्ण जीयन ज़न्म दोर मथरायि अन्दरो ।
सोन्दरो मेति वनि दर्शुन हाव ।।

086 दशरथ राज़न तप कोर अयोध्यायि अन्दरो ।
असि ति गौछ़ वनि सन्तान ।।
थन प्योव कौशेल्यायि निश रामच़न्द्रो ।
सोन्दरो मेति वनि दर्शुन हाव ।।

087 पोंपर दिच़म शमाहस गथा ।
रथा वन्दयि मालिन्यो ।।
बेनि छि बअयिस रफाकथा ।
रथा वन्दयि मालिन्यो ।।
मे छेयि बअयिजाननि सथा ।
रथा बन्दयि मालिन्यो ।।
आलथ त्रावेम मोहरअ हथा ।
रथा वन्दयि मालिन्यो ।।

088 में बेनि शराह द्रावयो
लेम्बि मन्ज़ पम्पोश फोलुम सरा ।
यज़मनन बनअव काह ताख लरा ।।
शारिका बीठस थरा दिथ ।
शामन वोतम नोश रंग चअरा ।।
में बेनि शराह द्रावयो ।

089 हुम वोथुम वीगि खोतुम
तोत वोथुम यारबल ।
महाराज वीगि खोतुम
तोत वोथुम यारबल ।।

090 सोनअ मोक्तअ बोरुम ढ़बस अन्दर ।
सोन्दर यियमय वअरिवयि ।।
सोन्दर यियम हशेन अन्दर ।
सोन्दर यियम ज़ामन अन्दर ।।

091 में बेनि राशुन पपिथ आव ।
येलि ज़ाव रामजू तेलि वर्षुन ।।
ज़मीनि सत फल ववनय आव ।
राम नवम दोह दितुनम दर्शुन ।।
मे बेनि राशुन पपिथ आव ।।

092 च़न्दुनयि-च़न्दुनयि बाह सास चन्दुनयि ।
च़न्दनयि कुलि तल लाला द्राव ।।
दश गन्ड़ि-गन्ड़ि ब वअच़स लप्दनयि ।
कोछ हेथ लछनोव करहस नाव ।।
कृष्ण भगवानो आयिसअय वन्दनयि ।
च़न्दनयि कुलि तल लाला द्राव ।।

093 बागस गयमो ज़अयि गुलि ताज़ ।
चे़ महाराज़ लागयो ।।
यज़मननेन गुलि गयि ताज़ ।
चे़ महाराज़ लागयो ।।

094 सदर मन्ज खोतमय पारिज़ात कुला ।
सुति फोलि बअति कर शुहलाह ।।
यज़मनस ज़ामय शूभिदार गुला ।
सुति फोलि बअति कर शुहलाह ।।

095 मे गछ़ि मीना लअगिथ सोनअ वअजि ।
ब छेस बब सन्ज़ खानमअजि ।।
में गछ़ि दोति सूठ बेयि सोनअ वअजि ।
ब छेस बायन हन्ज़ खानमअजि ।।

096 नअगिनि अन्दर विगिनि खचय ।
अथन मोक्तअ दोछ़्य हेथ ।।
यज़मन सुन्द घर कुन खचय ।
अथन मोक्तअ दोछ़्य हेथ ।।
स्येन्दरि बरिथ नेन्दरि हचय ।
अथन मोक्तअ दोछ़्य हेथ ।।

097 लोकटि यज़मन खोनखो रथे ।
अथे लाल त रत्न हेथ ।।
बाये म्याने खोतखो रथे ।
अथे लाल न रत्न हेथ ।।
निकय लालनि आहम अथे ।
अथे लाल न रत्न हेथ ।।

098 नच़न नच़न फलिम खोर ।
में गछ़ि जोर सुवुनयि ।।
वुछिव यज़मन सुन्द शोर ।
अमि मा सुवुयि कंअसि केंह ।।
ओगुन न तय दोगुन जोर ।
में गछ़ि जोर सुवुनयि ।।



नोशि अन्न विज़ि वनवुन

099 यज़मान बाय छै वाह वाह करान ।
शाह आव रोनि हेथ गाह त्रावान ।।

100 महाराज़ लालो सोन सन्दि कलमो ।
लक्षमी अनिथन हलमस केथ ।।

101 आँगनस सानिस मोखत आव छ़कनय ।
महारेनि महाराज़नि पकनय सत्य ।।

102 सतन लरेन कुनुय येकल ।
योत आय कुकिल ओल येरने ।।

103 महाराज़ लालो ओम दोद चेतमो ।
हाम गाव दितमो ज़ाम ब्रान्दस ।।

104 महाराज़ लालो हील मत हेतमो ।
नील गुर दितमो ज़ाम ब्रान्दस ।।

105 वोन्द नय यियीय वापस नितमो ।
तामथ दितमो शूभि बापत ।।

106 गर नाय म्योन गर छुय चोनुय ।
च़ हय आयरव रोज़नि सोनुये ।।

107 ब्रान्दस रवसवुन ह्योतुथ रवोचोनुय ।
ज़ोनुथ छुम हशि तोनुये ।।

108 यति नाय हशि तोन यति माजि तोनुय ।
च़ हय आयरव रोज़नि सोनुये ।।

109 हेरन रवसवुन हयोतुथ रवोच़ोनुय ।
ज़ोनुथ आसेम ज़ाम तोनुये ।।

110 यति नाय ज़ाम तोन यति छु बेनि तोनुय ।
च़ हय आयरव रोज़नि सोनुये ।।



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

भाग - ३

मेखला वनवुन

001 शोकलम करिथ वनवुन ह्योतुय ।
शोभ फल दितय मअज भवानी ।।

002 स्वर्ग पेठ अनतहोन पंड़िता छ़ारिथ ।
अग्न कोण्ड़स क्युत दियि साथ चारिथ ।।

003 नवि नेशपत्तरे रुत द्राव साथा ।
ज़ंगि हुन्द दाता छु श्री भगवान ।।

004 सोनसन्दि टोंगरे रोपसन्दि बेलो ।
बालय वालुस शेलै म्यच़ ।।

005 मेच़ि तय पअनिस खअच़ खम्बीरो ।
गम्भीर खोरमय अग्नय कोण्ड़ ।।

006 नाराण जुवस मागय मंगे ।
कन्यक ज़न्गे अनहोसे ।।

007 अग्न–कोण्ड़स ज़न्गि कुस ओयो ।
मंगला दीवी त नन्दकीश्वर ।।

008 अग्नचि ज़ंगे क्या–क्या पज़े ।
नून वरह तय मोहरा प्रास ।।

009 केसर कनि कोंग तय पानि कनि अमृत ।
सोम्बरिथ ख्वोरमय अग्नय कोण्ड़ ।।

010 अग्नय–कोण्ड़स सोन सन्ज़ सेरे ।
ज़ेरि–ज़ेरि ख्वोरमय अग्नय कोण्ड़ ।।

011 अग्न–कोण्ड़ ख्वोरथय राज़ बाई ।
ताज तारुख ज़ंगि आवुयोय ।।

012 अग्न–कोण्ड़स नेशोतर सोवुय ।
भवानी आय पोश लोवुय हेथ ।।

013 अग्न–कोण्ड़ ख्वोरमय शोक्ल–पख्वे ।
शोभ वारि तय नछतरस पेठ ।।

014 अग्न–कोण्ड़स कूंज कमि ख्वारियि ।
अपारि तोरमय नारायण ।।

015 अग्न–कोण्ड़स सोठकुवि चीनी ।
सोनि गज़ ख्वरिमय मीनि–मीनी ।।

016 अग्न–कोण्ड़स सोठकुव बर छुय ।
हर छुयि प्रारान दशनय ।।

017 अग्न कोण्ड़स कोंजे ह्योर छिय ।
जुर छुय वासदीव राज़नुय ।।

018 असि करमच़ कअम प्रिछ़िथ गोरस ।
ती आव परमीश्वरस खोश ।।

019 जमना ज़लय गगंय मेचे ।
हुमस क्युतुय लिवसय ।।

020 गंग–बल तोरमय गङ्गवा नोटुय ।
वोतेम वोटुय लिवसय ।।

021 आकाश वछ़रवय अम्भरावतिये ।
श्री सरस्वतिये कानी लिव ।।

022 हरमोख पतकुय श्रूच़–पोत्र तोरमय ।
हुमस क्युतुय लिवनोवमय ।।

023 ऑमि–दोद सअती कानी लिवसय ।
सॉरी समिवो सीवाकार ।।

024 दोद हर सअती कानी लिवसय ।
ओरअ यिय ब्रहमुण खिर वथरोस ।।

025 वोशनारि थोवमय पोशबाग लिविथ ।
दशरथ राज़ खोत श्रान करिथ ।।

026 स्वर्ग खोत सालिग्राम अरननि वेरे ।
धर्मच जाय लोग छ़ांडने ।।

027 स्वर्ग खोतयेय च़ंदन टूपुय ।
रुपय नाराणजूवने ।।

028 सोन सन्ज़ि मकच़े रोपसुन्द दन छुय ।
वन खअति चंदुन च़ंदुन च़टने ।।

029 पण्डितव वेद हेच़ पननिस च़ाटस ।
रातस कोरहय हुमुक सन्ज़ ।।

030 खोरन लव दिव ज़पके ज़ोरो ।
गोरो वन्दयो पादन रथ ।।

031 दोरन द्रायस मोक्तव शेरो ।
फेरन वाच़य चोन ड़ेर बल ।।

032 शेव-लूक जाये छेय परमीश्वरो ।
गोरो वन्दयो पादन रथ ।।

033 लव दिव खोरन ब्योयि शेंख शेरस ।
नरव छुरव ब्रहस्पत गोरस कुन ।।

034 मेखलि सन्ज़ ह्योत धमयन्ती माजे ।
तेल, डूनि तय गेव, श्रीफल ।।

035 खारसी पम्बच्छकिशमिश बादाम ।
आदन बोजीय लसिनय ।।

036 कलशस खारी त्रिशूल डूनी ।
ब्रह्मा, विष्णु त महेश्वर ।।

037 कलशस खारुस बादाम सासा ।
दासस रूमय-ऋटेषुन आय ।।

038 यूरि कुन मरेद तय तूरि बेछेयवो ।
तारक ज़ितिश वार रख लेछेयवो ।।

039 अर्षे वथिमति अर्ज़न दीवो ।
फर्षस पेठ छय कलशस जाय ।।

040 कलशिच विज़े रअथि वोथ नाराण ।।
कलशुक मण्डुल वाहरान ओस ।।

041 कलशिच विज़े दय टोठ्योयो ।
पूज़ि ब्यूठुयो नारायण ।।

042 बअडि आरव बोल त कृष्णनि लोलय ।
शोलय दिवुन ट्योकुय लाग ।।

043 वासदीव राज़िन गुरि गण्ड़ बाग़ुस ।
बडि ब्रह्मण लाग दातस ट्योक ।।

044 मोरवत चव ड़ोलस तरवति खानस ।
ट्योक लाग बादशाह देवानस ।।

045 दातो करयो ताबेदारी ।
गोरन गोण्डयो नारीवन ।।

046 मन्ज़ रोबरवानस वहारिमय डूनी ।
सोन कोसम तय मादलि पोश ।।

047 सदाशेवस मिन्नत मन्गो ।
कन्यक ज़न्गो अनहोसे ।।

048 हुमस ब्यूठहम गोर हेथ पानय ।
सोनसन्दि बानय वाहरोसे ।।

049 येति पेठ गयसय तुलमुल पानय ।
तनिकिस थानस दिवता जान ।।

050 योत वाति रॉगन्या त भूतीश्वर पानय।
सोनसन्दि बानय वाहरोसे ।।

051 कलशस पूज़ कर ओतेम नरयो ।
हरि हरो हलदरो ।।

052 कलशस पूज़कर धर्बे-तुल्यो ।
टॉपट कुल्यो यज़मन सन्दयो ।।

053 कलशस पूज़कर पम्पौश पतरो ।
मोखतव छतर छुख वास्दीव राज़ोनय ।।

054 कलशस पूज़कर कोंग तय सेंदरे ।
इन्द्राज़िनि रुचि भवि नय ।।

055 कलशस पूज़कर पोशव सअती ।
लछनावि ज़ामति लसीनय ।।

056 कलशस पूज़कर अर्ग त पोशो ।
सोरिव तप-ऋटेष सदाशिव ।।

057 पूरे कने खोतखो सिरियो ।
दूरे कोरमय नमस्कार ।।

058 चि़य छुख सारिनय प्राणावेशो ।
सोरिव . . . . ।।

059 सीतायि ओसुस सोनसुन्द केशो ।
खारिथ नियथन ड़ढ़ँख वन ।।

060 राम लक्षमण सुन्द दर्शुन डेंशो ।
सोरिव . . . . ।।

061 कन्यका रछिय वनक्येव रेशो ।
खारिथ नियनय ड़ढ़ँख वन ।।

062 युथहा हीमाल पर्बत निशो ।
सोरिव . . . . ।।

063 वासदीव राज़नि धर्म पोरोषो ।
जायि-जायि बनाविथ देवान खान ।।

064 सोठकव चीन तय मोखतवि पोशो ।
सोरिव . . . . ।।

065 कोतर बच्चन करु बोल भोषो ।
कोतरि चानि छय हुमस पेठ ।।

066 दोखतरि बोयी मोखतव पोशो ।
सोरिव . . . . ।।

067 फागनि फोलखो भेदमुशुक पोशो ।
गोशस रटथम कुलिस पेठ जाय ।।

068 गोड़ने सोन्त आहाम खोशो ।
सोरिव . . . . ।।

069 चित्रअ फोलहम वीरिकुम पोशो ।
गोशस रटथम जंगलय जाय ।।

070 नवरेह दोहो आहाम खोशो ।
सोरिव . . . . ।।

071 पेठय बान फोलहम चेरय पोशो ।
गोशस रटथम कुलिस पेठ जाय ।।

072 मेव चोन हुमन त यज्ञनेन खोशो ।
सोरिव . . . . ।।

073 आदन फोलहम बादाम पोशो ।
गोशस रटथम बागस मन्ज़ जाय ।।

074 भर्ग चोन सब्ज़ तय मेव चोन खोषो ।
सोरिव . . . . ।।

075 सोन्त फोलहम चूंठी पोशो ।
गोशस रटथम बागस मन्ज़ जाय ।।

076 भर्ग चोन सब्ज़ तय मेव चोन खोषो ।
सोरिव . . . . ।।

077 वहकी फोलहम गुलाब पोशो ।
गोशस रटथम वारि मन्ज़ जाय ।।

078 भर्ग चोन वोज़ुल तय मुशुक चोन खोशो ।
सोरिव . . . . ।।

079 ज़ीठी फोलहम च़ जाफरि पोशो ।
गोशस रटथम वारि मन्ज़ जाय ।।

080 च़यि छुरव रागन्यायि भूतीश्वर ख्वोशो ।
सोरिव . . . . ।।

081 हारी फोलहम गारी पोशो ।
गोशस रटथम सरस मन्ज़ जाय ।।

082 कोशन भाषण छहमो ख्वोशो ।
सोरिव . . . . ।।

083 श्रावनि फोलहम कुपसे पोशो ।
गोशस रटथम ड़ारस मन्ज़ जाय ।।

084 यरि लूक परिलूक परदय पोशो ।
सोरिव . . . . ।।

085 भादरि फोलहम धत़री पोशो ।
गोशस रटथम सूर बनि जाय ।।

086 सदा शिवस आहास़ ख्वोशो ।
सोरिव . . . . ।।

087 आशद फोलहम जाफरि पोशो ।
गोशस रटथम वारि मन्ज़ जाय ।।

088 ठोकर सअबस छहमो खोशो ।
सोरिव . . . . ।।

089 कार्तिक फोलहम कोङ्गय पोशो ।
गोशस रटथम पोंपुरह जाय ।।

090 ब्रह्मण तीज़स छहमो खोशो ।
सोरिव . . . . ।।

091 सोपूरि वत्ते लोग गलगोशो ।
शारद बलस दिवया जान ।।

092 माजि शारदायि हुन्द दर्शन ड़ेंशो ।
सोरिव . . . . ।।

093 नुनरि वत्ते लोगमुत रोशो ।
गगंय बलस छि दिवया जान ।।

094 बुथि शेरि वसवनि लजमो त्रेशो ।
सोरिव . . . . ।।

095 अनन्तनाग वत्ते लोगमुत गोशो ।
ड़ायि वुहरि बटन आव मलमास ।।

096 चाकबल पेतरन मोकलेय त्रेशो ।
सोरिव . . . . ।।

097 पहलगाम वत्ते लोगयो गोशो ।
अमरनाथस दिवया जान ।।

098 सदा शिव सुन्द दर्शन डेंशो ।
सोरिव . . . . ।।

099 शुपयन वत्ते लोग गलगोशो ।
दिगाम नागस दिवया जान ।।

100 कनिकन त बालकन मोकलेय त्रेशो ।
सोरिव . . . . ।।

101 हब्बकदल वत्ते लोग गलगोशो ।
गणपतयारस छि दिवय्रा जान ।।

102 गणपत सअबुन दर्शान ड़ेंशो ।
सोरिव . . . . ।।

103 बिन्द्राबन वत्ते लोगयो गोशो ।
जमनायि पेठ रास मन्ड़ला जान ।।

104 राधा कृष्णुन दर्शन ड़ेशो ।
सोरिव . . . . ।।

105 अग्नय कोण्ड़स सन्द्रुस त्यंगुला ।
मन्गला ज़न्गे अनोसे ।

106 अग्न सन्द्रावुस च़न्दन लशे ।
जि़नी त्रिशे लागोसे ।।

107 अग्न सन्द्रावुस च़ंदन गणय ।
वनय वालुस तुलसी काठ ।।

108 अनिगटि कनिनय करिथय नालमतिये ।
श्री सरस्वतिये यारबल वस ।।

109 यारबल खचरवय श्राणा करिथ ।
ध्याना सोरिथ भरथा सुन्द ।।

110 ड़ढरव वन खच़रवय नारी नारी ।
बजि बेनि हारी तरंगा गन्ड़ ।।

111 अवलय अनिथय नारिवनं थाजी ।
शाबश शरद माजिये ।।

112 हीमाल पर्वतस करिथय अंटय ।
कूर छरव लोटय रायेनी ।।

113 दीवकी मअजी करिथय अटय ।
कूर छरव दीवरव राज़नी ।।

114 कृष्णअ जुवनि च़जियय गटय ।
कूर छरव दीवरव राज़नी ।।

115 ड़ढरव वनची ऋटेषि वाई ।
दिव रायिस मन्ग नारीवन ।।

116 नारीवन थाजी अनिथय मन्गनाविथ ।
कमि वान अनिथय रंगनाविथ ।।

117 चंदन लति हन्गन गन्ड़ हन्ग तुमारय ।
बालि अछदारि रवारि नारीवन ।।

118 वासदीव राज़नि अनंतय माली ।
दअंतन सअति तार नारीवन ।।

119 वासदीव राज़नि वानेनि कूरी ।
कानी पेठ रवार नारीवन ।।

120 शाबश तस माजि यस माजि ज़ायरव ।
आयरवय रवारयिंय नारीवन ।।

121 बिशमक राज़नि गाटजि कूरीं ।
पाटिव रवारिथयं नारीवन ।।

122 नारिवन रवारिथय यग्नकि विज़े ।
दिवता पूज़े आमति छिय ।।

123 दीवरव राज़नि पोरवतय कूरी ।
मोरवतवि रवारिथय नारीवन ।।

124 दीवख राज़नि कूरि कोमारी ।
हारी खारिथय नारीवन ।।

125 बिशमक राज़नि असवनि हारी ।
प्रसनय खरिथय नारीवन ।।

126 दोहस मन्ज़य कोह बाल छोंड़थय ।
तवय गन्ड़िथय नारीवन ।।

127 दीवख राज़नि लायख हारी ।
छायख नारीवनन छुय ।।

128 हत वन छोडथय लछ तप कोरथय ।
हासिल कोरथय अकनन्दुन ।।

129 आकाशि वछ़खय इन्द्र घर चा़यख ।
आयखय रिच़ रिच़ कामि करने ।।

130 दिवकी मातायि हुरि बेछायखय ।
मुरि रचा़यथम रत्नय फल ।।

131 कृष्ण जुवनि वर्गस चा़यखय ।
आयखय रिच़ रिच़ कामि करने ।।

132 थकेवनि फेरन मोख किथ द्रोयय ।।
सोख सअति यज़मन बाईये ।।

133 टेकि पूचि़ टेडि मोम्ज़ नरि छेरवय दारान ।
यायमस छेरव करान लोलमत लाय् ।।

134 टेकि पूचि़ चोन पाटि किनारीं ।
बजि बेनि हारी नारीवन हाव ।।

135 टेकि पूचि़ चाने अतर्लिं वथर ।
शत्र पेयई पादन तल ।।

136 पोशत माली पोशत छुयेय ।
ठठन दार दूरन त ज़ालि जुमकन ।।

137 सर पम्पोशन टूरि गय ताज़य ।
ज़र महाराज़य लसिनम ।।

138 तन कमि दिच़यो पननी मामन ।
कोङ्ग. जामन छेय ज़ेबाई ।।

139 तन कमि दिच़यो कसंन तमामन ।
जामन वुछहोय ज़ेबाई ।।

140 पत ब्रोंह वुछयो बब इन्द्राज़न ।
मामन रवोररवो कोछे केथ ।।

141 यारबल रवसिथ गोरस निश चा़रवो ।
ज़ा़रवो इन्द्रे करने क्युत ।।

142 यारबल खसिथ पदम पोश प्रउ़वुथो ।
नोवयो गंग ज़ल सअति तन ।।

143 वुफि आव कोतुर कुठि ब्यूठूखो ।
दयि ड़्यूठूखो भाग्येवान ।।

144 मालिस खोवरी गोरस दछनी ।
वनि चे़ रछिनय नारायण ।।

145 कोङ्क. तय सेन्द्रे वयियो ब्राटी ।
ब्रह्मणन पिलवुस श्राण पठ ।।

146 दय सन्दि धर्म त इन्द्र सन्दि दान ।
ब्रह्मणन पिलवुस श्राण पठ ।।

147 सोमन कपसा ववनय आये ।
कृष्ण महाराजिन यछ़ायें ।।

148 वासदेव राज़नेन ड़ारन द्राये ।
चूर दिनि आये ग्रीस बाये ।।

149 शबनम लवि सअति फलिय आये ।
कृष्ण महाराजनि यछ़ाये ।।

150 वासदीव राज़नि ज़ेछि ज़ेछि कपसे ।
दपसे करसे योने हन ।।

151 रथि वोथ तोस तय अथि व्यसनोवमय ।
तथि करनोवमय योने हन ।।

152 मासव व्यसनोव तोसय फोतुय ।
पोफव कोतुय कलाबोत ।।

153 दिवकी व्यसनोव कनिकव कोतुय ।
योन्या लोदुय नाराणी ।।

154 समिथ विगनेव गछि कुठे ओल यूर ।
मालि त्रोव ज़ालि योनि नालि गोबरस ।।

155 गोडते सोन्तय ज़ंग आयि रच़ये ।
रोग फलि ज़न्बरव बागस हिय ।।

156 त्रे लर बब सन्ज़ि त्रे लर गोर सन्ज़ि ।
शु लोर योन्या प्रोवुथो ।।

157 टेकिस, योनेस त काकनि बन्दस ।
मोजेय वन्दुस च़न्दन तन ।।

158 कनि फोट पोनि तय वनि कुल ज़ोयो ।
अनि गाश ओयो लसिनय ।।

159 योनेस चानिस सोन सन्ज़ि टेकय ।
यि कसिय डेकय बजे ज़ाव ।।

160 यि हय ज़ाव वासदीव राज़नि रोनि ।
बेनि ज़ाव कमसा सोरने ।।

161 महाराज़ लालो लजियो बेन्ये ।
यि कस राजरेने ज़ाव ।।

162 योनेस चानिस रोफ त रोने ।
यि कस राजरेने ज़ाव ।।

163 चस गोव असरन, बर्ग आयि बोनेन ।
ब्रह्मणव गथ करि योनेस पेठ ।।

164 मोन्डुल लेखोयो सोमि सोमि जाये ।
शाये कृष्ण जूवने ।।

165 वासदीव राज़नि होगे वाल्यो ।
रोगे छानस मोहन्युव सोज़ ।।

166 मोहन्युव सूज़ितव विश्वार्कम छानस ।
कृण्णस किच़ अन दूजिय जान ।।

167 कृष्ण गोम चाटहाल अथि हेथ दूजिय ।
मोजिय जूजिय आलोसे ।।

168 कृष्ण गोम चाटहाल माजि दिच़िस शीरीन ।
मअलि बअगराविस दोछ़ि दोछ़ि दयार ।।

169 कृष्ण गोम चाटहाल मठस दूज मिलर ।
पत गयेस बेनि तलर दूज मिलर हेथ ।।

170 हचि हिन्ज़ दूजी मेचि़ सअति बरिज़ि ।
ओंगजि सअति करिज़ि प्राणायाम ।।

171 सोन सन्दि दूरदल, रोप सन्दि कलमो ।
गोडन्युक अछुर छुयि ओमअवो ।।

172 बलिराम जीयिनि सोन सन्दि कलमो ।
दोयिम अछुर छुयि स्वयं सू ।।

173 ओमअबो स्वयं सू तेविसते पविज़े ।
ध्याना सोरिज़े श्री रामुन ।।

174 विधारम्बस कुनुयि पअथर ।
नून वोर तय मोहरा प्रास ।।

175 नेमिथ गन्डयो धर्बि ड़ेन्टोनुय ।
समिथ दीवता सोनुय आव ।।

176 लोलय पूतिस मृगछाला नाली ।
मालि छुनुयो किन ब्रह्मणी ।।

177 वासदीव राज़नि ज़ाफल जृण्ड़ो ।
छ़अगिस छुनयो ब्रह्मण गण्ड़ ।।

178 दातव कअरहय ताबेदारी ।
गोरव लोगहय शेरस ट्योक ।।

179 ड़ेक प्रज़ोलुय ट्योक वोज़ोलुय ।
मोललुय गण्डुस कानकनि बन्द ।।

180 अवलकि कवलो लव दिव खोरन ।
गोरन सअति रोज़ शुकि मानमान ।।

181 सोनसुन्द तर्पुन दछिनिस मरनस ।
कर्मस ब्यूठुय नारायण ।।

182 वासदीव राज़नि मनि क्रेक गोबरो ।
सोन वाजि सअति कर आच़मन ।।

183 गुहि, गेव, दोद, ग्रुमित, नाबद सोंबरिथ ।
अमृत सअति कर आच़मन ।।

184 कृष्ण महाराजस सोमद्र बेनिये ।
समदन थनी मलो से ।।

185 वासदीव राज़नि लाल तय दूरो ।
अ़थन समदय मूरय छेय ।।

186 हाथी पोरिच चाँदि मगनअवमय ।
तअथि गरनोवमय अनीदि थाल ।।

187 दोहस गिन्दुथम तासन त ख़ासन ।
मासन ति गोवहम अबीदे ।।

188 अथन लाजिमय सोन सन्ज़ि वाजे ।
माजेन गोवहम अबीदे ।।

189 दोहस फ्यूरहम आनय ड़बन ।
बबन ति गोवहम अबीदे ।।

190 ज़ाविलेन जामन कजिमय गेने ।
बेनेन गोवहम अबीदे ।।

191 टेकिस मन्ज़बाग छ्युयो चिबय ।
जुवन ति गोवहम अबीदे ।।

192 च़ाहम ईशर जूवने गोफे ।
पोफन ति गोवहम अबीदे ।।

193 दोहस फ्यूरहम च़ाकवारेन ।
काकन ति गोवहम अबीदे ।।

194 दोहस फ्यूरहम जागीर गामन ।
मामन ति गोवहम अबीदे ।।

195 माजि हन्ज़ि व्यस तय मालि सन्दि यार छिय ।
मोहर तय ध्यर छिय फिरेवान ।।

196 किशमिश राठन वहरिथ ड़रिवये ।
परिवदार आयवो अबीदे हेथ ।।

197 बअडि आरव बोलत महाराज़नि लोलय ।
शोलय दिववुन ट्योकुय लाग ।।

198 श्रीफल सअती करिव आदि दर्शुन ।
सोफल लक्षमी वअतिनव ।।

199 सुलमान मेच़ तय गङ्ग.य वाने ।
सुभद्राये रवोरयो वारे दान ।।

200 मेचि़ तय पअनिस रवोत रवम्भीरो ।
गम्भीर असि रवोर वारे दान ।।



लीला

201 वारिदान रवोरनय सुभद्राये ।
अर्ज़ुन दीवनि भार्यये ।।

202 हरमोरव पेठचे बजि गङ्ग.ाये ।
सोन सन्जि़ गङ्ग.जे रोप सन्दि ठान ।।

203 गङ्ग.वानि सअती मेच़ अअडरन आये ।
अर्ज़न दीवनि भार्याये ।।

204 स्वर्ग अन्दरय क्राजि मास आये ।
सोन सुन्द वारि फोत कलस पेठ हेथं ।।

205 सुभद्रा सअनि तस रटने द्राये ।
अर्ज़न दीवनि भार्याये ।।

206 वयकोण्ठ पेठय कामदीन आये ।
विगिनि च़ाये दोद हनि सान ।।

207 आमि दोद सअति भत रननय आये ।
अर्ज़न . . . . ।।

208 छत्तरहार सूज़नय अन्नापूर्णाये ।
वारि दानस पेठ रननय आय ।।

209 शारिका भगवती बअगरनि द्राये ।
अर्ज़न . . . . ।।

210 रअथि वोथ वारिदान अयि रोट दिवते ।
सीवके नाराणजूवने ।।

211 वारेदानस शैत्रीह गग छियि ।
बेनियये लग छैयि बोयि लसिनय ।।

212 वारेदानस शैत्रीह चा़रे ।
हारि वाजि छतहार रनणी किच़ ।।

213 वारेदानस कुनुयि पोथर ।
नून वोर तय मोहरा प्रास ।।

214 सदाशिवस मिनथ मन्गो ।
कन्यक ज़न्गो अनोसे ।।

215 क्राजि अनि त माजि थव दछिन ।
पोफि ह्मोच़ अछेन लागने ।।

216 वारे दानस सन्द्रुस त्यन्गुला ।
मन्गला ज़गे अनोसे ।।

217 वारेदानस सन्द्राव च़न्दन गणय ।
वनय वालुस तोलसी काठ ।।

218 हारि रअनि भत वारि आमि दोद सअती ।
आय दरि बायि म्यानि अगनस हुम ।।

219 वारि भत रोणमय गजूर लशे ।
होदय शीशे कअरिजेस़ ।।

220 गोरन वोननय कन तअलि शब्दा ।
रबदा नीरिनन राम सुन्द ह्यूव ।।

221 चन्द्रय तारको बम्मा जीयो ।
मन्त्र बडि बोड होव थो ।।

222 शाबाश ब्रह्मा जियिनि चाटो ।
पनने गाटय लयेनय ।।

223 अग्न वत्तर अनिमय ताशेवानय ।
अग्नवाज़ योत आव पानय हेथ ।।



लीला (शिव बोकुचि)

224 लछि बअजि़ जी़वं ज़अचि वोलगिग्य आखो ।
चा़खो ब्रह्मण ज़नमस मन्ज़ ।।

225 वहिके ज़न पछि चो़दिश दोह ज़ाखो ।
तेलि ज़ाख पार्वती गणिश अवतार ।
गगरस खसिथ प्रक्रम द्राखो ।
चा़खो . . . . ।।

226 चि़त्र जून पछि नवम दोह ज़ाखो ।
कोशेल्या मातायि राम अवतार ।
राक्षसन, देतन गालनि आखो ।
चा़खो . . . . ।।

227 बअद्रषेत घट पछि अठम दोह ज़ारवो ।
दीवकी कअद मन्ज़ कृष्ण अवतार ।
राधायि सअती रास गिन्दीन आरवो ।
चारवो . . . . ।।

228 राधायि निशे लोताश ज़ारवो ।
ज़नमस आरव रच़अ कामि करने ।
ज़नमस यिथ च़यि कर्म बोड़ द्रारवो ।
चारवो . . . . ।।

229 अग्न-वत्तर अनिमय ज़नयकदलय ।
अदलय महाराज सअबने ।।

230 अग्न-वत्तर अनिमय बारें-बारे ।
दारि-दारि गेव हुम सारि म्येव सान ।।

231 पण्डितन ज्योतषेन हज़ार बूली ।
हुमस क्युित ग्येव रठ तूलि-तूली ।।

232 ब्रह्मणन त यज़मनन हज़ार बूली ।
अग्न-वत्तर रटहय तूलि-तूली ।।

233 स्वर्ग पेठ अनिमय दिवता गारिथ ।
हुमस किच़ चारहम अग्न-वत्तर ।।

234 अपारि ओनमय गणपत सअब गारिथ ।
विश्वामित्र ह्योथ चारनि ब्यूठ ।।

235 अग्नय-कोण्डस दछिन दार गव ।
भार्गव राम ब्यूठ हुम करने ।।

236 हुमस पेठ छुम रुज़िथ शोन्तुयि ।
दशरथ राजुन ब्रोतुय गोम ।।

237 हुमस ब्यूठहम पूरि दारि मोखय ।
अमि सोख भोविनय वासे सास ।।

238 अग्नय कोण्डस तेल ग्येव नरव छुयि ।
मोख छुयि चोतुर भोज़ नारायण ।।

239 कैलास डण्ड़ सअति अग्न छुख खेलवान ।
बलवान आहम तीज़ सोसतुय ।।

240 सतन वरियन कोरमय गूरय गूरय ।
हुमस पेठ छुखो दूरय शाह ।।

241 चयिहो यिवन चयिहो आदन ।
चयिहो बागुक बादाम पोश ।।

242 चयिहो दिवकी माजि हुन्द आदन ।
चयिहो शारिकायि पादन तल ।।

243 बलराम दिवान बंडार सादन ।
चयिहो बागुक बादाम पोश ।।

244 चयिहो शिवय नाथुन आदन ।
चेयि पत्त गालिमय मोहरअत ध्यार ।।

245 चे गालिमय मोहर ध्यार मै छा लादन ।
चयिहो बागुक बादाम पोश ।।

246 नाराणजूवुन पोशि खयुर बोरमय ।
चन्दनुक गोरमय वोमन होर ।।

247 वोमनहरिस छि जयि खानय ।
दानय दानय हुमसे ।।

248 शुराह कूजँ अग्नमनन वोमन होर भयाग ।
अरथा बूज़ि-बूज़ि हुम करान ।।

249 यिकोर वलबायि गणिशराज़स अर्ज़ा ।
चानि दोह चानि भक्ति निराहार ।।

250 रखमनि लसिनम कृष्णन् भर्था ।
अरथा बूज़ि-बूज़ि हुम करान ।।

251 वासदीव राज़नि टाठे पोत्रो ।
अछिनयि पेठ थव नेत्रय पठ ।।

252 चय़ि छुख मालिस त गोरस निशो ।
चय़ि छुख परान चय़तुर्वीद ।।

253 सोन सन्ज़ि हअँकल ऐरावतस ।
त्रोगुनि मेखल तारानस ।।

254 चेय़र तय बादाम लदयो लोंगन्ये ।
असवनि होगँने हुम करान ।।

255 चेय़र तय बादाम लदयो थालस ।
लालस हुम तय अरनि रोत ।।

256 सअरी दीवता आमति सालस ।
कृष्णस बोज़नि चोय़तुरवीद ।।

257 गायत्री त्रावहस अन्दिस नालस ।
लालस हुम तय अरनि रोत ।।

258 हुमस क्युत खोरमय मेव फोत दोबुये ।
खोबये दिथ छुय हुम करान ।।

259 वासदीव राज़नि वज़ीर गोबरो ।
अकि अकि खज़र हुमोसे ।।

260 शृोन गोय रोनेन तय रोप जंगोलन ।
हुम कर पादशाह बगंलन पेठ ।।

261 शॄन गोय रोनेन त बाज़य बन्दय ।
हुम कर ज़ाफल जॄड़ंन तल ।।



लीला (शिव–बोकुचि़)

262 विनायक चो़रम त आथवार दअरमय ।
कोरमय बरखुरदा़रयि नाव ।।

263 माजि भगवती हुन्द वृत क्या दोरमय ।
सुति ना कोरमय निराहार ।।

264 ग्येव चो़चि दोद सअति वोदरा बोरमय ।
कोरमय बरखुरदारयि नाव ।।

265 अठन रेतन कोठ क्या कोरमय ।
नवमि रेतय ज़ाम लेल वान ।।

266 थन येलि प्योम तय रन–प्येव कोरमय ।
कोरमय बरखुरदारयि नाव ।।

267 चूरिमि दोह त्रीय तेला कोरमय ।
शै मनअ गअरमय शेसतर क्राय ।।

268 दन्द गूजि सारी मसाल करिमय ।
कोरमय बरखुरदारयि नाव ।।

269 सोन्दरि सौ गोन धन क्या गोलमय ।
पशमीन सअती वजिमय तन ।।

270 रंग-रंग वस्त्र नअलि कित करिमय ।
कोरमय बरखुरदारयि नाव ।।

271 दहन दोहन दह हन्डि मओरमय ।
कहमि दोह कोरमय काहनेथर ।।

272 जोतशेन त पण्डितन साला कोरमय ।
कोरमय बरखुरदारयि नाव ।।

273 बहमि दोह लीखिमय रंग-रंग मन्डिल ।
आकअशि नकाश लेखनि आव ।।

274 याजन सअति बुसरक थाल बरिमय ।
कोरमय बरखुरदारीय नाव ।।

275 स्वर्ग पेठय वाज़ अननोवमय ।
सास बअदि सिन सुयि रननोवमय ।।

276 सोनेन दीचन पितरेन थाल बअरिमय ।
कोरमय बरखुरदारीय नाव ।।

277 मास–नेथरस सिवमय कर्व कनि खाली ।
लोल सान असि बअगरनि द्रायि ।।

278 प्रासकेन ध्यारन कनवालि गअरिमय ।
कोरमय बरखुरदारीय नाव ।।

279 शिशरस क्युत सामान क्या कोरमय ।
मोज़अ–कनटोप त फम्ब कुर्ता ।।

280 तअथि पेठ इसराफ शिशराह मोरमय ।
कोरमय बरखुरदारीय नाव ।।

281 शिमोसिस कोरमय अन प्रअप्योनुयि ।
मनस दोदस कोरमय खिर ।।

282 खोस रिकिब त गिलास गोरमय ।
कोरमय बरखुरदारीय नाव ।।

283 वोहरवअदिस बोड़ खर्चा कोरमय ।
बन्धन त बान्धवन कोरमय साल ।।

284 नरेन कित सोन सन्दि गुनस गअरिमय ।
कोरमय बरखुरदारीय नाव ।।

285 रव लोग भवनस थव आव कोंगस ।
सनज़ लोग मेखल तारनस ।।

286 अग्नुक दह खोत गगनचि राशी ।
काशी अन्दरकि ब्रह्मण आयि ।।

287 यी कोर वलबाई गणीश राज़नि राशी ।
तति आयि डींशित यतिं कोरुन हुम ।।

288 रखमनि लअसिनम कृष्ण जी आशी ।
काशी अन्दरकि ब्रह्मण-आयि ।।



लीला (शिव-बोकुचि़)

289 दशप्रज़ापतनिस ज़प-यग्नस तै ।
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ।।

290 आवाहन कोरुन ब्रह्मा-लूकस तै ।
ब्रह्मा, वेषण सअरी हेंथ ।।

291 सत ऋषि येति बीठी वीद परनस तै ।
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ।।

292 वासदीव राज़स धर्म पुरुषस तै ।
पूज़ा करनि बीठि ब्रह्मा दीव ।।

293 पूज़ायि लागस पम्पोश दस्तै ।
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ।।

294 वोमायि वोननय शँकर जीयन तै ।
मालिनेन जग छुय कोन प्रछहोय ।।

295 च़ति शूभहकना तथ यग्नस्तै ।
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ।।

296 वोमा फीरिथ वननि लअज तसतै ।
योरय गछ़नस अअब क्या छुम ।।

297 आसिहेक गांगल रुद्रकन हेसतै ।
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ।।

298 वोमा येलि वअच़ तथ थानसतै ।
तोत वअच़ तति नायि द्रास ब्रोंठ कांह ।।

299 क्याहतानि मलाल छुख मनसतै ।
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ।।

300 यिम शोछि सोज़हा महारूद्रसतै ।
तसति पज़िहे योत वातुनयि ।।

301 यग्न पेठ पज़िहेस टयोक करनसतै ।
दिवता आयि पोश दस्तय हेथ ।।

302 गगन पअकि दिवता भूमि पअकि सारी ।
कृष्णस मेखलि वअरी वअच़ ।।

303 यियिव मालि ब्रह्मणव खसिव सानि हेरे ।
लागिव मालि टयोक पोश अर्ग शेरे ।।

304 यियिव मालि ब्रह्मणव गछ़िव मालि जमा ।
करिव मालि यग्नअकि समाचार ।।



लीला (शिव–बोकुच़ि)

305 वोडि छेयि डेक पूच़ हलि ध्यार दीजये ।
वोथि डेक बजिये केछा ख्याव ।।

306 उग्रसनीननि कूरि डेक बजिये ।
नोश छेखय हेहरस क्या छुयि नाव ।।

307 वासदीव राज़नि खोलि ध्यार दीजये ।
वोथि डेक बजिये केछा ख्याव ।।

308 दीवक राज़नि कूरि डेक बजिये ।
कान्दुर ओयी च़ोचि पअंज हेथ ।।

309 खण्ड चोचि ख्यविथक त दिख बोटचे़र दजिये
वोथि डेक बजिये केछा ख्याव ।।

310 असि दीवी छय सामवीद ग्येवान ।
तोहि ब्रह्मण छिव शान्च़ करान ।।

311 ब्रहस्पत गोरी हाकन्य टाठ्यो ।
शेंकय शब्दा बूजुय नो ।।

312 तोहि चन्द गैरि असि क्या बोज़व ।
मण्डलिस कअच़ गरि रोज़ोवो ।।

313 बोज़ मालि ब्रह्मणो रोज़ कन दारिथ ।
मण्डुल त्राविज़ेन वेस्तारिथ ।।



लीला (शिव-बोकुचि़)

314 राम त लक्षमण बारनि आसि ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

315 दशरथ राज़नि सन्तान आसी ।
खसिथ बीठी ड़ण्ढख वन ।।

316 बिहिथ ख्येवान तति वोपल हाक खासी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

317 रावुन आयोस ब्रह्मुण लागिथ ।
सीता माता धर्मस दिम ।।

318 फन्द करिथ बारनि नियन वनवासी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

319 क्राजि मासी बान किथिय आसी ।
अकी कोंदे पयनन आयि ।।

320 अड़ि द्रायि खण्डि फुटि अडि सोन खासी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

321 तिमदय सतवय बारनि आसी ।
तिमनयि ओसुय समत्र्क्टेष नाव ।।

322 सोन्दब्रारि पतकनि रोज़ान आसी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

323 तिमदय पअँच़वाई बारनि आसी ।
तिमनयि ओसुयि पाण्ड़व नाव ।।

324 पाण्डव राज़ सन्दि सन्तान आसी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

325 तिमदय त्रेनवायि बारनि आसी ।
तिमनयि ओसुय त्रेकारण नाव ।।

326 वेष्ण-लूक, ब्रह्म-लूक, कैलास वासी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

327 तेलिकि बटअ क्या धर्मो आसी ।
कअशि दोह अअसी निराहार ।।

328. बअशि दोह छिय ख्येवान ब्रन-सूर ख्वासी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

329 अज़िक बटअ कअति पापी अअसी ।
कअशि दोह छिय ख्येवान गारि फलहार ।।

330 बअशि दोह छिय ख्येवान नेनि-भत ख्वासी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।

331 तेलिक बटअ कअत्या धर्मो अअसी ।
सत वुहुरि अअसि करान कन्या दान ।।

332 तिमनीय स्वर्गकि बर वथि आसी ।
राम-लक्षमण वनवासि गयि ।।



लीला (शिव बोकुचि़)

333 मेखलायि किति माल कर पोशनतै ।
वनतय राम जू यियिना सोन ।।

334 दशरथ राज़न तप करिनमतै ।
म्योन घर गोछ़ युन अवतार ।।

335 तति ज़न्म दोरुयि चन्द्रनतै ।
वनतय राम जू यियिना सोन ।।

336 राज़ दशरथन यग्न कोरनमतै ।
तमि मन्ज़ खतिस ज़यि खिर टाकि ।।

337 सोनव त्रेयव ख्येयि बागरिथ ज़न तै ।
वनतय राम जू यियिना सोन ।।

338 त्रेशवयव नवदि कोरहम वन तै ।
कोशेलयायि निशे राम जू ज़ाव ।।

339 भरत-राज़ ज़ामय कैकी ज़न तै ।
वनतय राम जू यियिना सोन ।।

340 शत्रुग्ण ज़ामय सुमित्रायि ज़न तै ।
सुमित्रायि निशे लक्षमण ज़ाव ।।

341 थन येलि पेयि तिम चोर बारनि तै ।
वनतय राम जू यियिना सोन ।।

342 गोरन ज़ानतक येलि अनिनखतै ।
ज़ातकन यिहिदेन छि रति रति गुण ।।

343 सीता वरनम राम-चन्द्रनतै ।
वनतय राम जू यियिना सोन ।।

344 दशरथ राज़नि जिगर गोशो ।
क्षमा पोशे रोटथो ।।



लीला (शिव-बोकुचि़)

345 चरव गछ़ि त्रावपि रचर गछ़िन ज़ाये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

346 अपारि बालय तुलरा आये ।
यपारि बालय यूरून ओल ।

347 तुलरा छ़ि वजिमच़ माछिचि माये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

348 यस त्रिय योत यित ज़ायि त प्याये ।
तस त्रिय तति छुयि मोकलन पाये ।।

349 तस त्रिय तति छेयि स्वर्गस जाये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

350 योस त्रिय जन्मस यितनअ येति प्याये ।
तस त्रिय तति छुयि नरकुन नार ।।

351 तस त्रिय भगवान करि उपाये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

352 पानय बनावथ मेचिव जाये ।
पानय ब्यूठहस अन्दर अचिथ ।।

353 पानय ब्यूठुख ठोर दिथ छाये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

354 यस त्रिय शेरस ब्रोंठ-ब्रोंठ द्राये ।
तस त्रिय तति वैकुण्ठस छेय ज़ाय ।।

355 स्वर्गकि लूख तति ब्रोंठ तस आये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

356 क्राल सन्ज़ि कोण्द येलि पयनय आये ।
अड़ि द्रायि सेदि तै अडि द्रायि हलि ।।

357 यस यिथ लानि आसि तस तिथ आये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

358 चुशीथ लछ ज़ीव ज़अच़ वोलगिथ आये ।
हअर, च़अर, कांटुर, मिनि, गअब त काव ।।

359 बोल छुरव कुनुय त ब्योन-ब्योन जाये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

360 बबस त माजि हन्ज़ि खानमअजि आये ।
बायन हन्ज़िय पअछि बाये ।।

361 बापोत्र दपान असि कम आये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

362 संध्या समयस तारख द्राये ।
बोम, शुक्र तय ब्येयि बृहस्पत ।।

363 रात गयि गाश आव घट गयि छाये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

364 सगरव पतकनि वुज़मल द्राये ।
रूप छुस शामय सुन्दरुन हयू ।।

365 तमिचे प्रव येलि प्येयि प्रज़ाये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।

366 माजि हन्दि गर्भय बारनि ज़ाये ।
कूर गोबर तय सोयि छि दयगथ ।।

367 तिमय पानवअनि दुश्मन द्राये ।
रोज़ संसार निश नेरमाये ।।



लीला (शिव-बोकुचि़)

368 ज़न्मस यिथ गछि कर्म पूरनयि ।
परम रूप गछि़ दारोनये ।।

369 भत पेठ हूनि मेट गछि़ त्रावानी ।
वरियिस समनय शैत्रीह सेर ।।

370 गोड़निचि डेडि छुयि हून आसानीय ।
परम रूप गछि़ दारोनये ।।

371 संसारस यिथ केंहनअ लारोनयि ।
यिनअ दपरव सोरुयि छु म्योनुये ।।

372 अथ छलिथ छुयि नेथनोन गछ़ोनयि ।
परम रूप गछि़ दारोनये ।।

373 हेकरवयि जुव गछ़ि सुलि वुज़ोनुयि ।
ब्रान्द-फश, सनिवार दयोनुये ।।

374 तमि सअति पापन छु नाश गछ़ोनयि ।
परम रूप गछ़ि दारोनये ।।

375 बर पेठ फकीरस माफ गछ़ि न करुन ।
पापनि देग गछ़ि न नोर वालनि ।।

376 तमि पाप जुव छुन कुनि मकलोनयि ।
परम रूप गछ़ि दारोनये ।।

377 वय पेठ तोमल मोठ मोठ गछ़ि सोम्बरनि ।
फकीरस किछ थावअनिये ।।

378 तमि सअति मकलन पायि गछ़ोनयि ।
परम रूप गछ़ि दारोनये ।।

379 हिश दृष्टि गछ़ि हर कांसि त्रावनि ।
कांसी लगिनअ कांटोनुये ।।

380 तस तति नरकस मन्ज़ छुयि गछ़ोनयि ।
परम रूप गछ़ि दारोनये ।।

381 यग्न मकलाविथ अथि फोल रटिव ।
रव्येयिव मालि पादशाह बागचि दछ ।।

382 माजि भवानि लोदुयि प्रअप्योनयि ।
लअर ब्योल तय छत्तरीय हार ।।

383 हावसि प्रअप्युन थावसि चोटुयि ।।
त्रावसि गोस तय बोज़सि वीद ।।

384 मअजि पअरि लजियो कुकिल हटिस ।
विगनि चोटिस प्रारान छेयि ।।

385 हशि नोशि अछ रछय ।
यग्निस खच़य प्रअप्यून हेथ ।।

386 यज़मन बाय करान आये त पाये ।
जानावर बीठिस जाये पेठ ।।

387 यकलय पेठचि कुकिलय हारी ।
सनिवारी त्राव पअतर च़ाल ।।

388 मोजि पअरि लजिवो पोज़यि परखनय ।
सैदय फुटजि छुयि नरखनयि पेठ ।

389 बर तल छुवो गुरि दुल प्रारान ।
शुरि दुल सोन वसि यारबल ।।



ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

भाग - ४

मकानस अचुन

001 ओ कर श्लोक पर श्री गणेशाये ।
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ।।

002 येति पेठ गयसय माजि शारिकाये ।
मोजि शरिका अअस बतअ बअगरान ।।

003 फ्युरनख थालन त हअरिनख आये ।
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ।।

004 देवान-खानस शेयित्रीह दारे ।
वोस्तन बनअविस नकशव सान ।।

005 दशरथ राज़ कौशेल्या शुरि हेथ चा़ये ।
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ।।

006 तुलमुल अन्दर रअग्न्या आये ।
दशरथ राजुन घर चा़ये ।।

007 अन, धन, सोन पोश हेथ सो आये ।
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ।।

008 देवान-खानस अन्दरयि चा़ये ।
नोशि कोरि आसय चाय बअगरान ।।

009 पोफ तय मासअ आसअ मारान ग्राये ।
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ।।

010 दानस बतस रोन पानअ वोमाये ।
पानस सअति ख्यअविन बन्ध बांधव ।।

011 ख्येय च्येथ सेद गअयेख मनकामनाये ।
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ।।

012 लअराह बनअवम लोल तय माये ।
सासअ बअदि आये कअम करने ।।

013 प्रेसर लअगिनख डेकन पोत्रन आये ।
अअसि नय बाये स्योद दस्तार ।।



सीता वाक (शिव बोकुचि़)

001 मनि मन्ज़ वनि आम मेयि श्री रामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

002 गोविन्द परमानन्द रूप शामय ।
निराकार छुख निरामय ।।
वामन वासुदेव सहस्र नामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि ज़य ।।

003 पथकालि ईश्वरन राज मंजामय ।
रावुन गालनअचि ओसुम प्रय ।।
ज़नक राज़नि घरि ज़नम दारयामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

004 तव पत ईश्वरन राज्य दिचा़मय ।
कीकियि वासना फीरिथ गयि ।।
वनवास करुन मनि तस आमय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

005 हनि-हनि तनि पुरिम बुर्ज़अ-जामय ।
वन वन फेरान वनि दितिमय ।।
मनि मन्ज़ आमय अर्न्तयामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

006 सामान त्रावि येलि प्रावि बुर्ज़अ जामय ।
लक्ष्मण सअति ह्योथ नीरिथ गयि ।
पत पत द्रावय शहरअ त गामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

007 जंगलस मँज सत्संग बोज़ामय ।
कम कम वीद, कम कम नेर्णय ।।
श्रूच़ वीद बूज़ुथ कन श्रोच़ामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

008 वन मन्ज़ राक्षुस द्रींठि आयामय ।
तस पतअ लारनस वेनतअ कअरमय ।।
लक्ष्मण ज़ू पतअ तूरि सोज़ामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

009 रावुण आम बड़ि व्यह क्रूध कामय ।
लङ्कायि नियनस त हअिवनम भय ।
ज़अजिनस, गअहजनस त लअजिनस धामय
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

010 दम दियि तअमि भ्रम दिच़ामय ।
कर्मस क्याह करअ बूज़नम नय ।।
धर्मस प्येठ मन दृड़ थाव्यामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

011 राक्षस अन्दि अन्दि रअछि रोज़ामय ।
सअति क्याह ओसुम कीवल दय ।।
नेत सुबह शाम राम-राम ज़प्यामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

012 गद-गद वानियव यच़ वज़ामय ।
क्याह सना बोज़ना ब च्योनुयि पय ।।
हलमत आव ओननम पय गामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

013 वोननम पानअ योत वाति श्री रामय ।
दूरिरअकि दोह वनि पूर्ण गयि ।।
तमि सन्दि वननअ सअति ब्येयि ज़ुव च़ामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

014 आरव येलि लङ्कायि प्येठ बोज़ामय ।
गोलथन रावुख त कोरथस क्षेय ।।
सअति नियथस ब गम गोस द्रामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

015 घर वअलि घरिकी ब्रोंठ द्रायामय ।
सअरिसयि नगरस शोहरथ गयि ।।
भरत राज़अ नीरिथ आव नन्द गामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

016 दोह पअँशि गय क्याह पाप ख्वचामय ।
कव ज़ान कअमि क्याह सना वोननय ।
पर वअवथस बर कअरथस खामय ।
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

017 संताप त्रअविथ सोरव प्राव्यामय ।
क्याह कर मर-मर छुम मरनय ।।
पनन्येव त परद्येव दिचहम पामय ।
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

018 लक्ष्मण जू ब्येयि मअचरनि आमय ।
वनस नेरनुक बोज़ाम पय ।।
त्रअविथ गोम मन्दिन्येन शामय ।
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

019 जंगलस मन्ज़ फरियाद दिचामय ।
व्याद क्याह अअसम पय दर पय ।।
नाद कअँसि बूज़ुम न पाय लोसामय ।
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

020 बारव-बारव दीयि दीयि चारव गयामय ।
ज़ोनुम न वुनि ब्येयि ज़िन्दगी छेयि ।।
ज्ञान विज्ञान व्यचार आयामय ।
च्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

021 रात–दोह ईश्वरस यी मन्जामय ।
ही दयअ अअसि नम में चअनी प्रय ।।
चारव गअयेम जिगरस आरव नअनि द्रामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

022 वाल्मीक ऋोष बूज़िथ तोर द्रामय ।
घर नियनस गअयेम धर्मचि प्रय ।।
ज़ान हअवनअम अवमान प्राव्यामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

023 दोह अकि बृहस्पत वुदयस च़ामय ।
अर्धय रातुक ओस समय ।।
गोअस द्राम सोरुयि लव–कुश ज़ामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

024 दोरव मअशिरअविथ सोरव प्राव्यामय ।
येमि विज़ि यिम बारनि ज़ थन प्येय ।।
भय त्रअविथ वार पअठि यछ़ामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

025 वुनिकेन पादन तल नाम्यामय ।
पानअ छुरव आसवुन जीव बन्धय ।।
आवारअ कअरथस शहरस त गामय ।
च़्येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

026 युथ सअम्पनिथ तोति दिच़थम पामय ।
शुरि लअज़ राज़अ कोनअ मशान छेयि ।।
द्‍युतथम तीर ब्रोठ थोर किनि द्रामय ।
च्‍़येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

027 क्या ज़ान ईश्वरन क्या लेछामय ।
दूरिरन चअनी कोरुम बुजरअयि ।।
वुनि वस भूमि तल भूम गछ़ि त्रामय ।
च्‍़येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

028 प्रकाश हावतम सोलग्रामय ।
दीवीद्वारन वअनि दितिमय ।।
मत रोशतम तोशतम में श्री रामय ।
च्‍़येयि परम धामय बोवि नयि जय ।।

029 वनि में टोठतम च़अयि श्री रामय ।
गरि-गरि छेम में चअनि मति-कामन ।।
नाव च्योन सोरहा नेत सुबह शामय ।
च्‍़येयि परमधामय बोवि नय जय ।।

शुभ समाप्त्



हिंञ्ज़े वनवुन

Printed at:
DURGA PRINTING PRESS
OLD JANIPUR, OPP. PATOLI MORH, JAMMU
PHONE: 549863

AADHAR DESIGNS